जसबीर भुल्लर
जंगल टापू
साहित्य

जंगल टापू

लेखक

जसबीर भुल्लर

अनुवादिका

शान्ता ग्रोवर

चित्रांकन

चैताली चटर्जी

साहित्य अकादेमी

Jungle Tapu : Hindi translation by Shanta Grover of Jasbir Bhullar's stories collection in Punjabi. Sahitya Akademi, New Delhi (1993), Rs. 40.

मुख्य कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह रोड,
नयी दिल्ली 110001

बिक्री केन्द्र

स्वाति, मन्दिर मार्ग,
नयी दिल्ली 110001

प्रादेशिक कार्यालय

जीवन तारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल,
23ए/44 एक्स., डायमंड हार्बर मार्ग,
कलकत्ता 700053

गुना बिल्डिंग, दूसरी मंज़िल,
304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट
मद्रास 600018

172, मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, बम्बई 400014

ए.डी.ए. रंगमन्दिर,
109, जे.सी. मार्ग,
बंगलोर 560002

ISBN 81-7201-482-1

मूल्य : चालीस रुपये

मुद्रक

विमल ऑफसेट, 1/11804, पंचशील गार्डन,
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032
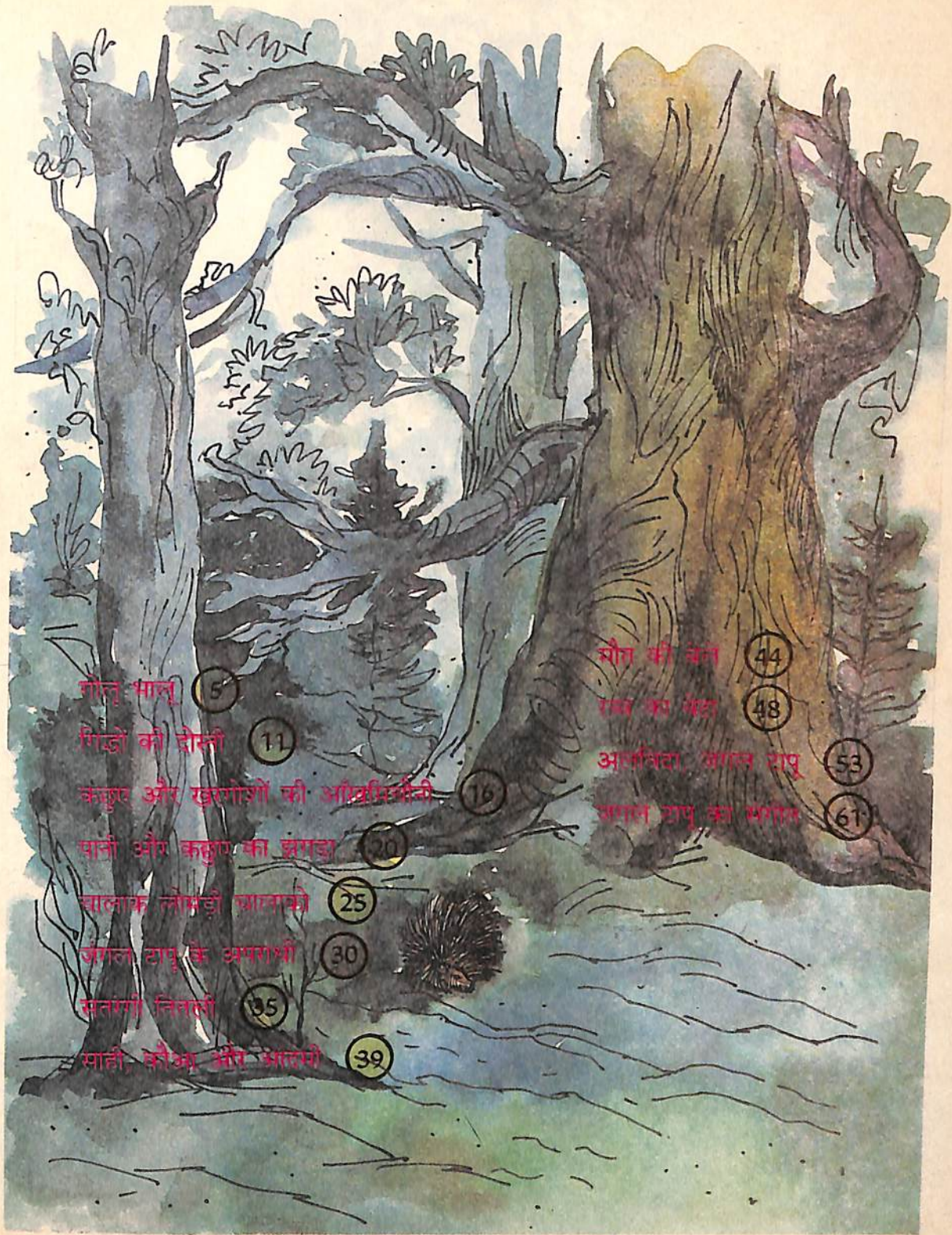
गोलू भालू

पहाड़ों और घाटियों में दूर-दूर तक फैला अछोर जंगल।

बहुत घना और डरावना!

पास ही एक तेज़ बहाववाली नदी। सूरज की गर्मी से पहाड़ों पर जमी बर्फ़ पिघली।

नदी में भयानक बाढ़ आ गयी। मिट्टी के बहने से पेड़ उखड़ गये। टेढ़ी-मेढ़ी नदी ने अपना रास्ता बदला तो चट्टानें खिसक गयीं।

नदी दो हिस्सों में बँट गयी।

नदी की दो धाराओं ने जंगल का बहुत-सा हिस्सा घेर लिया।

पानी में घिरे जंगल का वह हिस्सा बन गया जंगल टापू।

जब बाहर वाले जंगल से जानवर पानी पीने नदी पर आते थे तो वे बड़ी उतावली से जंगल टापू की तरफ़ देखते थे। वे पानी पीकर तो लौट आते थे, लेकिन जंगल टापू पर जाने के बारे में कभी नहीं सोचते थे। नदी का बहाव बहुत तेज़ था और उनके मन में बह जाने का डर रहता था।

सर्दी के दिनों में सूरज की गरमी कुछ कम हो जाती थी। पहाड़ों की चोटियों पर जमी बर्फ़ बहुत कम पिघलती थी। इस कारण नदी का पानी कम हो जाता था। तब भी बाहरवाले जंगल के जानवर जंगल टापू पर जाने की हिम्मत नहीं करते थे। उनकी आदत ही कुछ इस तरह की बन गयी थी। वे पानी पीते थे, जंगल टापू की ओर देखते थे और वापस चले जाते थे।

यहीं एक भालू भी रहता था—जिसका नाम था गोलू। वह दूसरे जंगली जानवरों से अलग ही नहीं, शरारती भी था। नदी का पानी कुछ कम हुआ तो उसने नदी के पार जाने का मन बना लिया।

नदी में बेशक पानी थोड़ा था, लेकिन उसका बहाव तेज़ था। वह जंगल टापू तक पहुँच तो गया, लेकिन पानी के तेज़ बहाव ने उसे बहुत थका दिया था। उसने अपने झबरे शरीर से पानी हटाने के लिए बदन को झटका और फिर लेट गया।

वहाँ चीटियों की कई बाँबियाँ थी, लेकिन गोलू को इन बाँबियों की कोई परवाह नहीं थी। ऐसी कई बाँबियाँ उसके बदन से टपकते पानी से भर गयीं और कई उसके नीचे आकर दब गयीं।

वह थका-हारा वहीं सो गया। वह जब सोकर उठा तो उसे बड़े ज़ोर की भूख लगी। उसने सुस्ती उतारने के लिए ज़ोर-ज़ोर से छलाँगे लगायीं और अपने पैरों के नीचे कई बाँबियाँ दबा दीं। उसे इसकी बिलकुल परवाह नहीं थी कि उसने चीटियों की सारी बस्ती ही मटियामेट कर दी थी।

भूख के मारे उसे रास्ता भी नहीं सूझ रहा था। जिधर उसका मुँह था, वह उसी तरफ़ चल पड़ा।

रास्ते में वह सारे फूल तोड़-मरोड़कर फेंकता बढ़ गया। आख़िरकार वह जंगल टापू के उस हिस्से में पहुँच गया, जहाँ मधुमक्खियों के बड़े-बड़े छत्ते थे।

गोलू ने अपने लिए शहद का भरा हुआ एक छत्ता चुना। उसने पंजे से मधुमक्खियों को भगा दिया और छत्ते से शहद पीने लगा।

मधुमक्खियों ने बचाव के लिए गोलू पर हमला भी किया, लेकिन उसके शरीर पर इतने बड़े-बड़े बाल थे कि उनका डंक उसके शरीर तक नहीं पहुँच सका। नन्हे-नन्हे ख़रगोश हमेशा की तरह आज भी आँखमिचौनी खेल रहे थे। उन्हें भालू के बारे में कुछ मालूम नहीं था। एक-दूसरे को ढूँढ़ते हुए जब वे नदी किनारे पहुँचे तो उन्होंने फूलों को सिर नीचा किये देखा। वे खड़े हो गये।

फूलों ने कहा, "तुम्हें मालूम है, एक भयानक जानवर ने आज हमें तहस-नहस कर दिया है।"

नन्हा ख़रगोश उदास हो गया। उसने पूछा, "तुमने किसी का क्या बिगाड़ा था ! तुम तो किसी के साथ भी बैर-भाव नहीं रखते। तुम तो सबको सुगंध देते हो।"

"बड़ा ही दुष्ट जानवर है—मालूम नहीं कौन होगा ?" भोलू ख़रगोश ने सोचने की कोशिश की।

"मालूम नहीं, हम तो किसी ऐसे जानवर को नहीं जानते।"—छोटू ख़रगोश बोला।

"शायद वह बाहरवाले जंगल का हो," एक फूल ने कहा, "अगर वह जंगल टापू का होता तो हमें क्यों तोड़ता ? ... इस तरह तो हम बिलकुल ही ख़त्म हो जायेंगे।"

फूल कराहने लगे। ख़रगोशों का जी उदास हो गया। उन्होंने फूलों से कहा, "तुम दिल छोटा मत करो, हम ऐसा नहीं होने देंगे। यदि तुम ही न रहे तो यह जंगल टापू सुन्दर कैसे लगेगा ? इसमें ख़ुशबू कहाँ से आयेगी ?"फूलों की उदासी-से नन्हे ख़रगोश खेलना ही भूल गये। वे कुछ आगे बढ़े तो कुचली हुई बाँबियाँ थीं और चीटियों का रोना-धोना मचा हुआ था। बिलों को कुचलने की करतूत भी गोलू भालू की ही थी। नन्हें ख़रगोश वहीं से वापस लौट पड़े। रास्ते में मधुमक्खियों की घूँ-घूँ एक और तबाही की कहानी कह रही थी। बूढ़ा ख़रगोश अपनी खोह के सामने गहरी सोच में डूबा था। नन्हे ख़रगोशों ने पहुँचते ही बूढ़े ख़रगोश को घेर लिया।

"बाबा, कुछ मालूम है ?"

"हाँ, मुझे मालूम पड़ गया है। सारे जंगल टापू में एक ही बात हो रही है।" बूढ़े ख़रगोश ने मानो अपने-आप से कहा, "पता नहीं, वह कौन-सा जानवर है, जिसने एक दिन में ही जंगल टापू की शान्ति भंग कर दी है।"

"बाबा, उस जानवर को सबक़ सिखाना ही पड़ेगा।" सभी ख़रगोश ऊँची आवाज़ में बोले।

"कहते हैं, वह बहुत मोटा-तगड़ा है।"

"बाबा, अगर वह तगड़ा भी है तो क्या हुआ ? आपने ही तो कहा था कि बड़े-से-बड़े बलवान को बुद्धि की ताक़त से हराया जा सकता है।" छोटू ख़रगोश की बात सुनकर बूढ़े ख़रगोश

की हिम्मत बँध गयी। वह बोला, ''बच्चो, मैं तो यूँ ही हिम्मत हार बैठा था। तुम लोग चिन्ता न करो। जंगल टापू की शांति भंग करनेवाले को ज़रूर सबक़ मिलेगा।''

बूढ़ा ख़रगोश सारी रात गोलू को सबक़ सिखाने का तरीक़ा सोचता रहा, लेकिन उसे कुछ भी नहीं सूझ रहा था।

अगले दिन भी जंगल टापू में हाहाकार मचा रहा।

गोलू पानी पीने गया तो वहाँ मेंढकों को टाँगों से पकड़-पकड़कर पानी के तेज़ बहाव में फेंकने लगा। मेंढक बह-बहकर अपने संगी-साथियों से दूर जा रहे थे। किनारे पर खड़ा गोलू तालियाँ बजा-बजाकर हँसता रहा।

उसने उस दिन कुछ दूसरे छत्तों का शहद भी पिया। अलमस्त घूमते हुए उसने चूहों के कई बिल भी अपने पैरों से दबा दिये, ख़रगोशों की कई खोहें भी गिरा दीं।

कई-कई परिन्दे तो बाहरवाले जंगल तक जाते रहते थे। उन्हें गोलू के बारे में सारी जानकारी थी। पक्षियों ने जंगल टापू के सभी जीवों को गोलू की करतूतों से सचेत किया।

बूढ़ा ख़रगोश जंगल टापू के बड़े बुज़ुर्गों में से था। जंगल टापू को गोलू भालू से बचाने का फ़र्ज़ उसका ही था। गोलू भालू के बारे में बेशक़ वह पूरी तरह जान चुका था, लेकिन अभी तक उससे बचाव का रास्ता उसे नहीं मिला था।

चिन्ता में डूबे बूढ़े ख़रगोश के चेहरे पर अचानक चमक आ गयी। उसे उपाय सूझ गया। अपनी तैयारी को सफल बनाने के लिए उसे कुछ और जीवों की सहायता चाहिए थी। एक क्षण के लिए उसने कुछ सोचा और फिर झट उठ खड़ा हुआ।

सबसे पहले बूढ़े ख़रगोश ने अपनी योजना को सफल बनाने के लिए उचित स्थान की तलाश की। नारियल के लम्बे-लम्बे पेड़ों से घिरी ख़ाली जगह गोलू को सीधा करने के लिए बिल्कुल ठीक थी। उसने उस चुनी हुई जगह के बारे में सारे जीवों को बता दिया। बन्दरों, ख़रगोशों, चूहों और चींटियों को बुलाकर उनके करने लायक़ काम उन्हें समझा दिए।

सभी उसी वक़्त अपने-अपने काम में लग गये।

बन्दर लम्बी-लम्बी मज़बूत बेलों का जाल बुनने लगे।

ख़रगोशों और चूहों ने नारियल के पेड़ों की बीच की जगह को बिल बना-बनाकर खोखला कर दिया। कीड़े भी चूहों और ख़रगोशों के साथ खोदी हुई मिट्टी बाहर फेंकने लगे।

अगली सुबह तक उन सबकी मेहनत से, पक्की दिखायी दे रही ज़मीन के नीचे एक गहरा गड्ढा बन गया था। लेकिन गड्ढे पर मिट्टी की छत वैसें ही बनी रही।

गोलू भालू को घेरकर फन्दे की तरफ़ लाने का जिम्मा भोलू, छोटू, डब्बा और सफ़ेद ख़रगोश ने उठाया।

वे चारों गोलू को ढूँढ़ने चल पड़े, लेकिन इतने बड़े जंगल टापू में वे गोलू को भला कहाँ

ढूँढ़ते ? चलते-चलते उन्हें एक तोता मिला। उन्होंने उससे कहा—

"हरा पीला तोता तू, सबके मन को भाता तू !
गोलू भालू का पता बता, आज तू सबकी जान बचा।"

तोते ने ख़रगोशों को वहीं रोक लिया और ख़ुद गोलू को ढूँढ़ने के लिए उड़ गया। तोता ऊँचा उड़कर आसमान से दूर-दूर तक देख सकता था। उसे जल्दी ही गोलू भालू मिल गया। वह एक बड़े-से पत्थर पर लेटा हुआ धूप सेंक रहा था।

तोते ने आकर ख़रगोशों को भालू के बारे में बताया तो भोलू, छोटू, डब्बा और सफ़ेद ख़रगोश छलाँगें लगाते उधर ही दौड़ पड़े। गोलू वहीं लेटा हुआ था, जहाँ तोते ने बताया था, लेकिन वह शायद सोया हुआ था।

सबसे पहले, भोलू धीरे-धीरे उसके पास गया और उसके ऊपर से छलाँग लगाकर कूद गया। गोलू सचमुच गहरी नींद सोया हुआ था। छोटू, डब्बा और सफ़ेद ख़रगोश बारी-बारी गोलू के ऊपर से कूदे, लेकिन भालू की आँख नहीं खुली। वे दूर खड़े होकर ऊँचा-ऊँचा बोलने लगे—

"गोलू-मोलू, झबरे भालू यई-यई यई।
नटखट, निखट्टू भालू, यई यई यई।
दढ़ियल, मोटू, भालू, यई, यई, यई।"

गोलू हड़बड़ाकर उठ बैठा। छोटे-से ख़रगोश उसे दाँत दिखाकर चिढ़ा रहे थे। वह ग़ुस्से में ख़रगोशों को पकड़ने के लिए दौड़ा। चारों ख़रगोश उसके आगे-आगे दौड़ने लगे। गोलू भालू ख़रगोशों की तरह तेज़ नहीं दौड़ सकता था। वह हाँफता हुआ खड़ा हो गया। ख़रगोशों ने खड़े होकर उसे फिर चिढ़ाया—

"भद्दा-गंदा भालू, यई, यई, यई।
मैला-कुचैला भालू, यई, यई, यई।
बुद्धू, बेवकूफ़ भालू, यई, यई, यई।"

गोलू फिर उनके पीछे दौड़ा। आख़िरकार चारों ख़रगोश उसे फन्देवाली जगह ले आये। गोलू बहुत बुरी तरह थक चुका था। उसे अपने भारी शरीर के साथ बहुत दूर तक दौड़ना पड़ा था।

चारों ख़रगोश उस जगह पर खड़े हो गये, जहाँ उनके नीचे ख़रगोशों, चूहों और कीड़ों द्वारा तैयार किया गया गड्ढा था। उन्होंने गोलू को आख़िरी बार चिढ़ाया—

"गोलू-मोलू, झबरे भालू, यई, यई, यई !
दढ़ियल, मोटू भालू, यई, यई, यई।

नटखट, निखट्टू भालू यई, यई, यई।
बुद्धू, बेवकूफ़, भालू, यई, यई, यई।
भद्दा-गंदा भालू, यई, यई, यई।
मैला-कुचैला भालू, यई, यई, यई !''

गोलू को लगा ख़रगोश इस बार उसकी पहुँच से दूर नहीं हैं। अब वह ख़रगोशों को एक छलाँग लगाकर पकड़ सकता है। उसने पूरा ज़ोर लगाकर ख़रगोशों की तरफ़ छलाँग लगायी।

ख़रगोश तो पहले से ही तैयार खड़े थे। वे पलक झपकते ही गोलू की पकड़ से दूर हो गये।

गोलू मुँह के बल ज़मीन पर आ गिरा। उसके भार से खोखली ज़मीन बैठ गयी और वह धड़ाम से नीचे गड्ढे में जा गिरा। इससे पहले कि वह सँभलता, बेलों का जाल भी गड्ढे पर आ पड़ा। बन्दरों ने बेलों के किनारों को मज़बूती से नारियल के पेड़ों के साथ बाँध दिया। नारियल के पेड़ पर चढ़े बन्दरों ने अपना काम शुरू कर दिया। गोलू पर आसमान की तरफ़ से तड़-तड़ नारियल बरसने शुरू हो गये। मधुमक्खियों ने भी गोलू को आ घेरा।

गोलू पागलों की तरह इधर-उधर भागा। घबराकर उसने जाल तोड़ने की कोशिश की। वह बहुत चीख़ा-चिल्लाया, रोया और फिर निराश हो गिड़गिड़ाने लगा।

झाड़ियों में छुपे जानवरों ने बाहर आकर गड्ढे के आसपास घेरा डाल दिया।

''बता, तू क्यों हमारे जंगल में आया ?'' नारियल के ऊँचे पेड़ पर बैठा एक बन्दर ग़ुस्से से कड़का।

गोलू ने बन्दर को देखने के लिए मुँह ऊपर किया। तभी तीन-चार नारियल उसके मुँह पर आकर लगे।

''बता, यहाँ क्यों आया है ?''

''मैं देखना चाहता था कि तुम्हारा जंगल टापू कैसा है !'' भालू रुआँसा होकर बोला।

''अगर तुम जंगल टापू को केवल देखकर चले जाते तो हमें कोई ग़ुस्सा नहीं था,'' बूढ़ा ख़रगोश बोला, ''लेकिन तुम तो ... ।''

''नहीं नहीं, मैंने कुछ नहीं किया।'' गोलू ने जल्दी से कहा।

''हाँ, हाँ, तुमने तो कुछ नहीं किया।'' बन्दरों को फिर ग़ुस्सा आ गया। वे फिर नारियल तोड़-तोड़कर भालू पर बरसाने लगे।

बूढ़े ख़रगोश ने उन्हें नारियल मारने से रोका।

बन्दर ने दाँत किटकिटाये और बोला, ''हाँ, तुमने तो कुछ नहीं किया। तुमने तो सिर्फ़ चीटियों के घर उजाड़े। मेहनत से इकट्ठा किया मधुमक्खियों का शहद चुरा लिया और कुछ मेंढकों को पानी की तेज़ धारा में फेंक दिया। बस तुमने तो केवल सुन्दर-सुन्दर फूल तोड़े और पौधों को जड़ों से उखाड़कर तोड़-तोड़कर ...।''

"गोलू की शरारतों की बड़ी लम्बी कहानी है।" बूढ़े ख़रगोश ने बन्दर को चुप रहने का इशारा किया और बोला, "लेकिन हम इससे मालूम तो करें कि अगर वह केवल जंगल टापू देखने आया था फिर उसने इसे तहस-नहस क्यों किया।"

"मैंने जंगल टापू में आकर देखा कि यहाँ सभी जानवर मुझसे छोटे और कमज़ोर हैं, मुझे कोई रोकनेवाला नहीं, इसलिए मेरे मन में जो आया मैंने वही किया।"—गोलू ने दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा, "भाइयो, मेरी अक्ल पर पर्दा पड़ गया था। अब मुझे अक्ल आ गयी है। मुझे माफ़ कर दो।"

"अगर हम तुम्हें छोड़ देंगे तो तुम फिर सबको तंग करोगे। तुम जैसों का क्या भरोसा ?" बूढ़ा ख़रगोश यह बात कहकर उठ खड़ा हुआ, "अब तुम हमारी क़ैद में हो। भूखे-प्यासे यहीं पड़े रहो।"

"बाहरवाले जंगल में तो मैं बड़े जानवरों की मार से छिपता रहता था। अब मुझे छोटे-छोटे जीवों की ताक़त का अंदाज़ा हो गया। इस ताक़त का सामना तो हाथी भी नहीं कर सकता; फिर मेरी क्या बिसात !"

गोलू ने फिर प्रार्थना की, "मुझे एक बार छोड़ दो। मैं कान पकड़ता हूँ। तुम जो कहोगे, मैं मानने को तैयार हूँ। अब मैं जान गया कि अगर हम अच्छे काम करें, तभी सुखी रह सकते हैं।"

बूढ़े ख़रगोश ने एक पल सोचा और बोला, "तुम फिर किसी बेक़सूर को तंग तो नहीं करोगे ?"

"नहीं करूँगा, बिलकुल नहीं करूँगा !"

"तुम किसी की चोरी तो नहीं करोगे ?"

"नहीं करूँगा, बिलकुल नहीं करूँगा।"

"तुम फूल-पौधों को तो नहीं तोड़ोगे ?"

"नहीं तोडूँगा, बिलकुल नहीं तोडूँगा।"

जंगल टापू के जीवों का ग़ुस्सा अभी उतरा नहीं था। वे उसकी नक़ल उतारते हुए बोले, "गोलू को नहीं छोड़ेंगे, ... बिलकुल नहीं छोड़ेंगे।"

गोलू ज़मीन पर नाक रगड़ने लगा, "इस बार मुझे माफ़ कर दो।"

"वादा करो कि तुम फिर कभी जंगल टापू में नहीं आओगे।"

"नहीं आऊँगा ... कभी नहीं आऊँगा। ... क़सम खाता हूँ, अपने बाप की क़सम खाता हूँ।"

बूढ़े ख़रगोश ने इशारा किया। बन्दरों ने पेड़ों से बँधी बेलों की गाँठें खोल दीं। गोलू गड्ढे से निकलकर तुरंत नदी की तरफ़ भागा। बिना साँस लिए ही उसने नदी में छलाँग लगा दी और बाहरवाले जंगल में जाने के लिए पानी में जल्दी-जल्दी हाथ-पैर चलाने लगा।

इधर सारे जानवर खुशी में नाचने लगे।

गिद्धों की दोस्ती

गर्मियों के दिन थे।

एक नीलगाय ऊँचे टीले से घास चरते-चरते नीचे गिर पड़ी और मर गयी।

नीलगाय जहाँ गिरी थी, वहीं पड़ी रही। उससे बदबू आने लगी। जब बदबू जंगल टापू की हवा में फैल गयी तो सभी जीव-जंतु बेचैन हो गये। वे घबराहट में एक दूसरे की तरफ़ दौड़े। वे एक दूसरे से एक ही सवाल पूछ रहे थे, "हवा से यह बदबू कैसे जायेगी ?"

इस सवाल का जवाब किसी के भी पास नहीं था। थक-हारकर वे बैठ गये।

तभी बन्दर को बूढ़े ख़रगोश का ख़्याल आया। वह उठा और एक टहनी से दूसरी टहनी पर छलाँग लगाता हुआ बूढ़े ख़रगोश के पास पहुँच गया।

बूढ़ा ख़रगोश आँखें बन्द किये एक झाड़ी के पास बैठा हुआ था।

बन्दर ने पूछा, "बाबा, क्या आपको लग रहा है कि हवा में से बदबू आ रही है।"

"हाँ।" बूढ़े ख़रगोश ने आँखें खोलते हुए कहा।

"किन्तु आप तो बिलकुल शान्त बैठे है। आपके चेहरे पर ज़रा भी घबराहट नहीं है।"

"शान्त रहकर ही हर समस्या का हल ढूँढ़ा जा सकता है। घबराहट या चिन्ता से समस्याएँ और बढ़ जाती हैं।" बूढ़े ख़रगोश ने अपनी गम्भीर आवाज़ में कहा।

"बाबा, क्या कभी हवा में से बदबू ख़त्म भी होगी ?"

"हाँ, क्यों नहीं !"

"हमें इसका उपाय बताइये न, बाबा !"

"कोई भी समस्या ऐसी नहीं होती, जिसका कोई उपाय न हो, लेकिन उपाय ढूँढ़ना पड़ता है।"

"उपाय तो हम ढूँढ़ेंगे, लेकिन रास्ता तो बताइये !"

"तो सुनो !" बूढ़ा ख़रगोश बन्दर के कुछ और क़रीब हो गया, "मेरे बाबा बताया करते थे कि जब कोई जानवर मर जाये तो बादलों की ओर से कोई पक्षी आता है और वह मरे हुए जानवर को उठाकर ले जाता है।"

"उस पक्षी की पहचान क्या है ?" बन्दर ने पूछा।

"यह तो मुझे भी नहीं मालूम, लेकिन मैं सुबह से उसी पक्षी की तलाश में गया हुआ था, अभी-अभी लौटा हूँ। जंगल टापू के पक्षी भी उसे ढूँढ़ने के लिए उड़ चुके हैं। कुछ और जीवों को

भी मैंने इसी काम के लिए भेजा है। तुम भी जंगल टापू का कोना-कोना छान डालो, कोई भी अनजाना पक्षी मिले तो उससे उसके बारे में पूछो। वह आख़िर कहीं तो मिलेगा।"

नये उत्साह से भरकर बन्दर वापस लौट-आया।

उस अनजाने पक्षी की तलाश में जीव अलग-अलग दिशाओं की ओर निकल पड़े।

हवा में बदबू बढ़ रही थी।

अगले दिन उन्होंने अचानक एक चीलनुमा पक्षी देखा। वह आसमान में मँडरा रहा था। धीरे-धीरे चक्कर लगाता हुआ वह पक्षी जंगल टापू के उस कोने में उतर गया, जहाँ मरी हुई नीलगाय पड़ी थी।

शायद यही वह अनजाना और विचित्र पक्षी था।

सारे जीव-जंतु उस पक्षी को देखने के लिए पहुँच गये।

वह बड़ा भारी-भरकम पक्षी था। उसकी गरदन पर पंख नहीं थे। उसका सिर भी चपटा था। उसके दोनों पंख मज़बूत और बड़े-बड़े थे। उसकी आँखें देखने से ही पता चल जाता था कि उसकी

नज़रें दूरबीन-जैसी तेज़ थीं। वह पक्षी कई मील दूर तक देख सकता था। उस पक्षी की चोंच नुकीली और आगे से मुड़ी हुई थी। उसकी चोंच बड़ी आसानी से नीलगाय के मांस में घुस रही थी। वह पक्षी स्वाद ले-लेकर नीलगाय का मांस खा रहा था। उसके पैर दूसरे पक्षियों की तरह दो ही थे, लेकिन बहुत मज़बूत थे। उसके पैरों पर कीलों जैसे उगे हुए नाख़ून थे। तीन नाख़ून पैर के आगे और एक पीछे था।

पक्षी को मांस खाते देखकर सभी जीवों का दिल दहल गया। कोई और समय होता तो वे उस पक्षी को मार-मारकर जंगल टापू से भगा देते लेकिन इस समय उसके साथ बात करना ज़रूरी था। बूढ़े ख़रगोश ने पूछा, ''कौन हो तुम ! क्या नाम है तुम्हारा ?''

उसने चोंच में भरा मांस अन्दर निगला और बोला, ''मैं गिद्ध हूँ। मेरे बाक़ी साथी मुझे पहला गिद्ध कहकर बुलाते हैं, क्योंकि मैं जहाँ ज़रूरत पड़ती है, उस जगह सबसे पहले पहुँचता हूँ।''

इतना कहकर गिद्ध दुबारा चोंच भर-भरकर मांस खाने लगा।

आसमान से एक-एक करके कई गिद्ध उतर आये। वे मांस पर टूट पड़े।

सभी जीव कुछ डरे हुए और कुछ हैरान-से गिद्धों को मांस खाते हुए देखते रहे। बूढ़ा ख़रगोश अचानक आपे से बाहर हो गया। वह चीख़कर बोला, ''तुम सभी गंदे हो। गंदे और घिनौने। ऐसे घटिया जीवों का हमारे जंगल में कोई काम नहीं। चले जाओ यहाँ से ! मैंने सुना था, तुम जानवर को उठाकर ले जाते हो, लेकिन तुम तो ... !''

गिद्धों में थोड़ी हलचल हुई, लेकिन वे उसी तरह जल्दी-जल्दी मांस नोच-नोचकर खाते रहे।

''तुम सबके दुश्मन हो।'' बूढ़ा ख़रगोश और भी ग़ुस्से से भर उठा, ''तुम्हारे साथ कोई भी बोलचाल नहीं रखेगा। सभी तुमसे दूर-दूर ही रहेंगे। तुम तो ... तुम तो ...।''

पहला गिद्ध घबरा गया। उसने सिर ऊपर उठाया। उसने बूढ़े ख़रगोश के सफ़ेद बालों की तरफ़ देखा और कहा, ''बाबा, किसी के बारे में जाने बिना उसे शाप दे देना, यह भला ...।''

''तो क्या मैं मांस नोचकर खानेवाले पक्षियों को वरदान दूँ।'' बूढ़ा ख़रगोश उसी सुर में बोला, ''तुम्हारा क्या है, तुम तो कल हमें भी मार डालोगे और फिर हमारा मांस भी खाओगे।''

''क्या आपने कभी सुना है कि किसी गिद्ध ने किसी ख़रगोश को मारा है ?''

''नहीं ... लेकिन ... ।''

''तुम सब मांसाहारी हो। यदि किसी को मारोगे नहीं तो मांस कहाँ से खाओगे ?'' हिरण बोला।

दूसरे गिद्ध भी मांस खाना छोड़कर उनकी तरफ़ देखने लगे।

पहला गिद्ध फिर बोला, ''क्या आप लोगों ने कभी देखा या कभी सुना है कि किसी गिद्ध ने हिरण को मारा है या किसी दूसरे जानवर को मारा है। तुम इतने सारे जानवर यहाँ जमा हो, कोई भी बता दे ज़रा।''

पहले गिद्ध के बोलने में वही ताक़त थी, जो सच बोलनेवाले की आवाज़ में होती है। उसने

सारे जानवरों की तरफ़ देखा, लेकिन वहाँ ऐसा कोई नहीं था जो सीना तानकर यह कहता कि उसने गिद्धों को जीवों का शिकार करते देखा है। वह फिर बोला, ''गिद्ध दोस्त होते हैं, दुश्मन नहीं। गिद्ध किसी को नहीं मारते।''

''लेकिन तुम मांस तो ...।'' किसी जानवर की झिझकती हुई आवाज़ उभरी।

''हाँ, हम मांस खाते हैं। हम मरे जीव का मांस खाकर अपना पेट भरते हैं, लेकिन इसमें ही सबका भला है।''

''सबका भला ?''

''हाँ, सबका भला। ... तुम सबका भला।'' पहले गिद्ध ने कहा, ''यदि हम मांस नहीं खायेंगे तो बदबू से तुम्हारा जीना दूभर हो जाएगा। मांस के सड़ने पर बीमारी फैलेगी। हम तो तुम्हें बीमारी से बचाने आये हैं। जंगल टापू की हवा साफ़ करने आये हैं। तुम लोग नाराज़ मत होओ। हम दो-तीन दिन में पूरा मांस खाकर उड़ जायेंगे।''

यह कहकर पहला गिद्ध फिर मांस खाने लगा।

अगले ही दिन जीवों को लगा कि वे खुलकर साँस ले सकते हैं। हवा में मांस की बदबू बस कहने को ही रह गयी थी। भद्दे और गंदे दीखनेवाले गिद्ध अब जंगल टापू के जानवरों को अच्छे लगने लगे।

बूढ़े ख़रगोश को पछतावा हो रहा था कि उसने बिना सोचे-समझे इतने अच्छे पक्षियों पर अपना गुस्सा उतारा था।

शाम तक हवा में रत्तीभर भी बदबू नहीं बची। सारी रात जंगल टापू में ठण्डी हवा बहती रही। बूढ़ा ख़रगोश मुँहअंधेरे ही गिद्धों से मिलने निकल पड़ा।

गिद्ध अपना काम ख़त्म कर उड़ने को तैयार थे। बूढ़े ख़रगोश ने आगे बढ़कर कहा, ''हम तुम्हें यूँ ही बुरा समझ बैठे थे। तुम बेखटके हमारे टापू में रहो।''

''नहीं, हमें जाना पड़ेगा।''

''तो इसका मतलब है तुम लोग अभी भी नाराज़ हो !''

''नहीं बाबा ! हम बिल्कुल नाराज़ नहीं है। गिद्ध किसी से नाराज़ नहीं होते। हमारा काम तो हवा को साफ़ रखना है। हम एक ही जगह पर कैसे रुक सकते हैं।'' पहला गिद्ध हँसा, ''बाबा, वैसे भी एक सच्चे ख़रगोश का शाप कैसे टल सकता है। आपने कह जो दिया है कि अब जानवर और पक्षी हमसे दूर-दूर ही रहेंगे। गिद्ध तो हमेशा से सभी जीवों के दोस्त रहे हैं। लेकिन अब हम अपने दोस्तों में बैठ नहीं सकेंगे, रह नहीं सकेंगे।''

बूढ़े ख़रगोश का मन उदास हो गया। उसे अपने गुस्से पर काबू रखना चाहिए था। गुस्से में कही गयी बातें अच्छी नहीं होती। मुँह से निकली बात अब वापस नहीं आ सकती थी। उसने झिझकते-झिझकते कहा, ''हम संदेशा भेजेंगे, तब तो आओगे न !''

उस समय बहुत-से गिद्ध उड़ान भर चुके थे। बूढ़े ख़रगोश की आवाज़ गिद्धों के भारी पंखों की फड़फड़ाहट में डूब गयी।

पहले गिद्ध ने उड़ते-उड़ते अपने पंख बन्द कर लिये। उसने बूढ़े ख़रगोश की बात सुन ली थी। वह दो क़दम चलकर बूढ़े ख़रगोश के कुछ और पास आ गया और बोला, "बाबा, जब भी आपको ज़रूरत पड़ेगी, हम अपने आप पहुँच जायेंगे। सच्चा दोस्त वही होता है, जो दोस्त के बुरे समय में बिना बुलाये और बेखटके पहुँच जाये और उसकी मदद करे। गिद्ध तो सबके दोस्त हैं।"

अपनी बात ख़त्म कर पहले गिद्ध ने आकाश की तरफ़ उड़ान भरी।

बूढ़ा ख़रगोश काफ़ी देर तक वहीं बैठा रहा और अपने ऊपर पहले गिद्ध के पंखों की ठण्डी हवा के झोंके महसूस करता रहा।
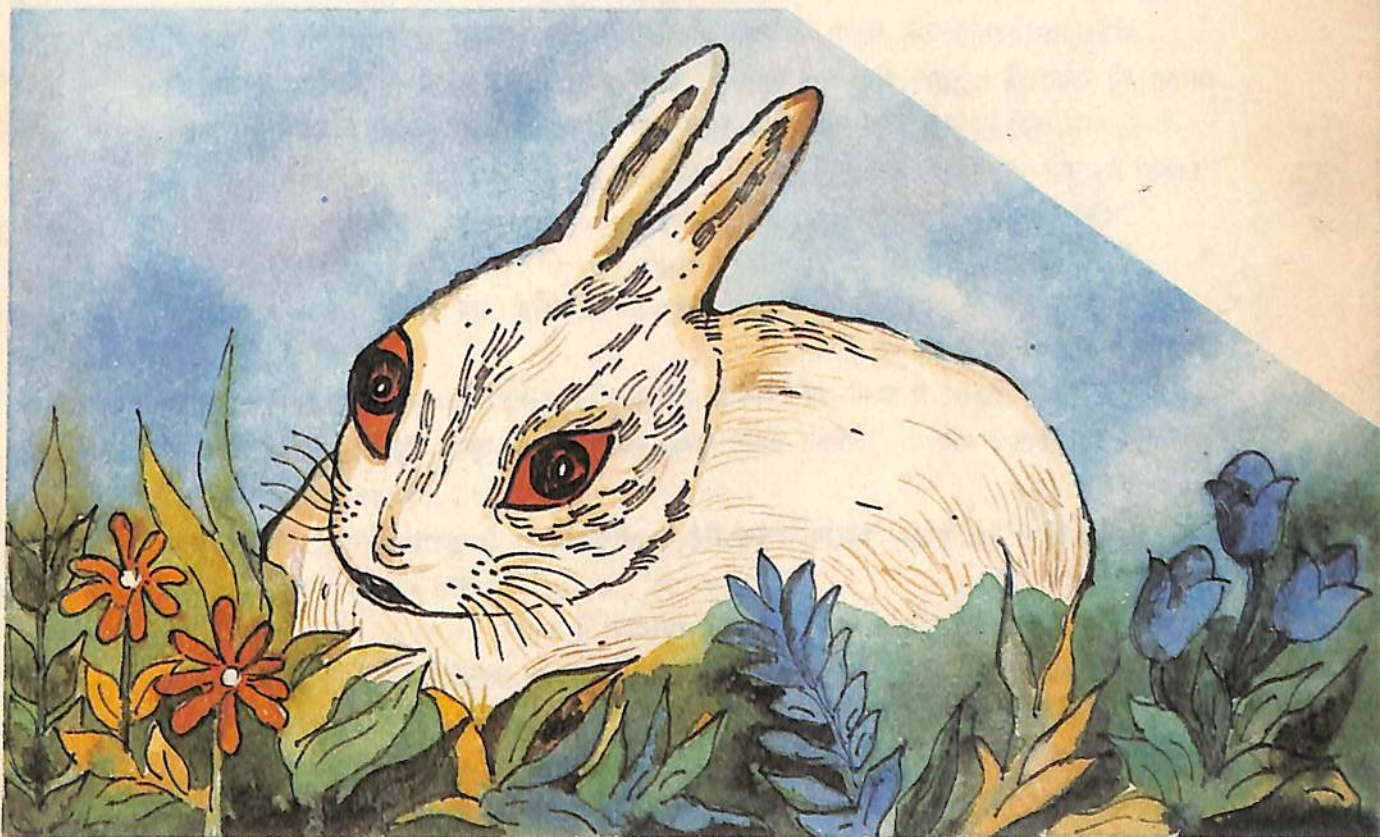
कछुए और ख़रगोशों की आँखमिचौनी

छोटे-छोटे ख़रगोश रोज़ की तरह आज भी आँखमिचौनी खेल रहे थे। एक कछुआ, जिसके शरीर से पानी टपक रहा था, नदी से बाहर आया। वह कुछ देर ख़रगोशों को खेलते हुए देखता रहा और फिर उनके पास आकर बोला, ''मुझे भी अपने साथ खेलने दो।''

उन्होंने खेलना बन्द कर दिया और उसके आसपास इकट्ठे हो गये।

''तुम कछुए हो न !''

''हाँ।''

भोलू ख़रगोश ने उसे ध्यान से देखा और बोला, ''देख कछुए, आँखमिचौनी के खेल में भागना भी पड़ता है। तुझसे दौड़ा नहीं जायेगा। इससे हमारे खेल का भी मज़ा बिगड़ जायेगा।''

''अगर कछुआ नहीं भाग सकता तो भला और कौन भागेगा ?'' कछुए ने हँसते हुए कहा, ''लगता है, तुम्हें अपनी हार याद नहीं रही।''

''कौन-सी हार ?''

वे सब हैरान हो गये।

''लेकिन मैंने तो पहले कभी भी तुम्हारे साथ आँखमिचौनी नहीं खेली।'' डब्बे ख़रगोश ने अगले पंजे से सिर खुजलाते हुए कहा।

''हाँ, हमने आपस में कभी आँखमिचौनी नहीं खेली।'' कछुए ने अपना सिर अपने खोल से पूरा बाहर निकालकर बताया, ''लेकिन हमारे पुरखों में से एक ने तुम्हारे किसी पुरखे को दौड़ में हराया था।''

''दौड़ में ?'' छोटे-छोटे ख़रगोशों का मुँह पहले तो हैरानी से खुला रह गया, लेकिन दूसरे ही पल वे हँसने लगे।

''तुम गप्प अच्छी हाँक लेते हो।'' सफ़ेद ख़रगोश ने कहा।

''यह गप्प नहीं, '' कछुए ने कुछ ज़ोर देकर कहा, ''सब जानते हैं; चाहे किसी से भी पूछ लो। यह तो किताबों में भी लिखा हुआ है।''

''किताबों में ! किताबें क्या होती हैं ?'' छोटू ख़रगोश कछुए के कुछ और पास आ गया।

''किताबें ! ... देखी तो मैंने भी नहीं।'' कछुआ कुछ उलझन में पड़ गया।

''ठीक है। वैसे तुम्हारी बात सच हुई तो कल से हम तुम्हारे साथ ज़रूर खेलेंगे।''

''मैं कल फिर आऊँगा।'' कहकर कछुआ पानी में कूद गया।

ख़रगोशों को लगा, कछुआ उनका अपमान करके चला गया है। खेल से उनका मन उचट गया। वे खोहों की ओर लौट पड़े।

बूढ़ा ख़रगोश अपनी खोह के बाहर बैठा हुआ था।

वे सब उसके सामने जाकर खड़े हो गये।

''बाबा, एक बात बताओगे ? क्या अपना कोई पुरखा कभी किसी कछुए से दौड़ में हार गया था।'' भोलू ख़रगोश ने पूछा।

''हाँ।''

''क्या !''

''हाँ, हार गया था।'' बूढ़े ख़रगोश ने बताया, ''वैसे वह कछुए से बहुत तेज़ दौड़ता था।''

''यह क्या बात हुई ?''

''देखो, एक बात सदा याद रखो।'' बूढ़े ख़रगोश ने गम्भीर आवाज़ में कहा, ''हमेशा हाथ में आया काम पूरा करने के बाद ही आराम करना चाहिए। लेकिन हमारा पुरखा यह उसूल भूल गया। उसकी हार धीरे दौड़ने से नहीं, इस उसूल की अनदेखी करने की वजह से हुई। वह दौड़ में कछुए से बहुत आगे निकल गया था, लेकिन दौड़ ख़त्म करने से पहले ही वह आराम करने के लिए रुक गया था। वह चाहे कितना ही तेज़ क्यों नहीं दौड़ता था, लेकिन था तो सोया हुआ। सोये हुए से तो धीरे चलनेवाले को ही आगे निकलना था।''

अगले दिन ख़रगोशों ने कछुए को अपने साथ आँखमिचौनी के खेल में शामिल कर लिया।

बारी छोटू ख़रगोश की थी। उसने पेड़ के तने की तरफ़ मुँह करके आँखें बन्द कर लीं और ऊँची आवाज़ में कहा—

''लुक छिप जाना, मकई का दाना
बाँट के खाना, छुप जाओ आलओ, भोलओ।
छोटू ख़रगोश आया रे।''

कछुआ अभी दो क़दम ही चला था कि सभी ख़रगोश चौकड़ी भरते झाड़ियों में जा छुपे। चारों तरफ़ से ख़रगोशों की आवाजें सुनायी दीं ''आ जा।''

''आ जा !''

उन आवाज़ों में कछुए की आवाज़ नहीं थी। छोटू ख़रगोश ने एक बार फिर ऊँची आवाज़ में कहा—

''लुक छिप जाना, मकई का दाना
बाँट के खाना, छुप जाओ, आलओ, भोलओ।
छोटू ख़रगोश आया रे।''

कछुए ने पीछे मुड़कर देखा। छोटू ख़रगोश उससे कुछ ही क़दमों की दूरी पर था। उसे जल्दी

से छिपना चाहिए था। वह पकड़ा जाना नहीं चाहता था। उसने अपनी गति और तेज़ की। फिर कुछ सोचकर अचानक रुक गया। उसने सोचा कि उसे भागने की क्या ज़रूरत ? वह कोई ख़रगोश तो नहीं कि उसे भागने या छिपने की ज़रूरत पड़े। उसके तो अपने अन्दर ही छिपने की ताक़त थी।

झाड़ियों में से फिर ख़रगोशों की आवाज़ें आ रही थीं।

"आ जा।"

"आ जा।"

कछुए ने भी अपना सिर पूरी तरह ऊपर उठाकर ऊँची आवाज़ में कहा, "आ ... जा ... ।"

आवाज़ देकर जल्दी से उसने अपने पैर और सिर अपने अन्दर छिपा लिये और वहीं पत्थर की तरह जम गया।

छोटू ख़रगोश ने आँखें खोलीं और अपने साथियों को ढूँढ़ने के लिए मुड़ा। सामने कछुए को पड़ा देखकर वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा।

कछुए को अपने चारों तरफ़ अँधेरा-ही-अँधेरा दिखायी दे रहा था। यह अँधेरा उसके अपने भीतर का था, लेकिन कछुए को पूरा विश्वास था कि उसका छिपना किसी को भी नज़र में नहीं आ

सकता। उसके अन्दर पहुँचकर कोई भी उसे ढूँढ़ नहीं सकता।

वह अपने अन्दर सिर समेटे इंतज़ार करता रहा, करता ही रहा और फिर उसे नींद आ गयी। अचानक उसकी आँख खुली। उसे लगा जैसे बाहर कोई उसके शरीर को थपकी दे रहा हो।

उसने सिर बाहर निकालकर देखा तो हैरान रह गया। सारे ख़रगोश उसके आसपास घेरा डालकर खड़े हुए थे और उसकी तरफ़ देखकर ऊँचा-ऊँचा हँस रहे थे।

उनकी हँसी को अनदेखी कर कछुए ने पूछा, ''अब किसकी बारी है ?''

छोटू ख़रगोश ने उसकी तरफ़ पंजा बढ़ाते हुए कहा, ''तुम्हारी।''

सभी और ऊँचे स्वर में हँसने लगे।

''लेकिन मैं तो छिपा हुआ था।''

''कहाँ ?''

''तुम मेरे साथ मज़ाक़ कर रहे हो !''

भोलू ख़रगोश ने उसे बड़े प्यार से समझाने की कोशिश की, ''कछुए भाई, तुम कहीं नहीं गये थे। तुम यहाँ सामने ही बैठे रहे। तुम अभी भी वहाँ ही हो, जहाँ तुम्हें छोटू ख़रगोश ने छुआ था।''

कछुए ने बड़े गुस्से से उनकी तरफ़ देखा, ''तुम लोग मुझे मूर्ख समझ रहे हो ! क्या मुझे नहीं मालूम कि मैं अपने अन्दर छिपा हुआ था।''

''लेकिन तुम अपने अन्दर कैसे छुप सकते हो !''

कछुआ ग़ुस्से में नदी की तरफ़ चल पड़ा। उसे विश्वास था कि उसकी बारी नहीं है बल्कि सभी ख़रगोश मिलकर उससे अपने बुज़ुर्ग की हार का बदला ले रहे हैं।

तभी एक तेज़ लहर आयी और कछुए को भिगोकर वापस चली गयी।

वह खीझकर बोला, ''यह भला क्या बात हुई कि मैं अपने अन्दर नहीं छिप सकता। मेरी मर्ज़ी, मैं चाहे जहाँ छिपूँ।''

''लेकिन हम ... हम तुम्हें देख सकते थे।''

''जब मैं ही ख़ुद को नहीं देख सकता था, फिर तुम लोग मुझे कैसे देख सकते थे ! अपने शरीर के अन्दर छिपे हुए कछुए को भला तुम लोग कैसे पकड़ सकते हो ! मैं चला। आगे से मैं कभी तुम जैसे धोखेबाज़ों के साथ नहीं खेलूँगा।'' यह कहकर कछुआ पानी में चला गया।

ख़रगोश काफ़ी देर तक हैरानी से वहीं खड़े रहे; फिर उन्होंने यह अनोखी घटना ख़रगोश बाबा को जाकर सुनायी। बाबा ख़रगोश पहले तो हँसा और फिर गम्भीर होकर बोला, ''बेचारा कछुआ अपनी ही देह को अपने से अलग करके देखता है।''

फिर तो सभी ख़रगोश ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

पानी और कछुए का झगड़ा

पानी काफ़ी समय तक कछुए को ढूँढ़ता रहा, लेकिन वह नदी में नहीं मिला।

पानी ने कछुए की पत्नी से पूछा, "तुम्हारा घरवाला कहाँ गया है ?"

"बाहर गया है, जंगल टापू पर।"

"क्यों ?"

"ख़रगोशों के साथ आँखमिचौनी खेलने।"

"मैं तो यहीं था। उसे मेरे साथ खेलना चाहिए था।"

मछलियाँ तो पहले ही कछुए से खार खाये बैठी थीं। वे पास से निकलती हुईं आग में घी डाल गयीं, "कछुए को चाहिए था कि वह पानी से पूछकर ही बाहर जाता।"

"वह काफ़ी समय से बाहर नहीं गया था।" कछुए की पत्नी ने अपने पति का पक्ष लेते हुए कहा, "वह अपने कंधों से पानी का भार उतारना चाहता था और कुछ देर के लिए खुली हवा में साँस लेना चाहता था। अब तो वह आनेवाला ही होगा।"

"अच्छा, तो अब मैं कछुए के लिए भार बन गया हूँ।" पानी ने कहा।

"नहीं, ऐसी बात नहीं है।" पानी का ग़ुस्सा भाँपकर वह जल्दी से बोली, "तुम ग़लत समझ रहे हो। मेरा मतलब था ... दरअसल बात यह थी ... ।"

"तू चुप रह !" पानी ने उसे मीठी झिड़की देकर चुप करा दिया, "तेरे पति से मैं खुद ही निपट लूँगा।"

जैसे ही कछुआ पानी में उतरने लगा, वैसे ही एक तेज़ लहर ने उसे उलट देना चाहा।

"क्या कर रहा है तू ?" कछुए ने अपने आपको सँभालते हुए कहा।

"यही बात तो मैं तुमसे पूछ रहा हूँ कि यह तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं समझा नहीं !"

"अब तू मुझे भार समझने लगा है। क्या तुम्हारा यही रिश्ता है मेरे साथ ?" पानी ग़ुस्से से बोला।

कछुआ पहले से ही खीजा हुआ था। ख़रगोशों ने खेल में धोखेबाज़ी कर उसका जी बहुत खट्टा कर दिया था। उसने भी अपना ग़ुस्सा पानी पर उगल दिया, "कैसा रिश्ता ? रिश्ता वैसा ही होता है, जैसा तुम निभा रहे हो। मेरी सारी उम्र तुम्हारे साथ बीत गयी, फिर भी तुम मेरा कोई लिहाज़ नहीं करते। जब तुम्हें ग़ुस्सा आता है तो मेरे बच्चों को बहाकर ले जाते हो और आज तो मुझे भी ... ।"
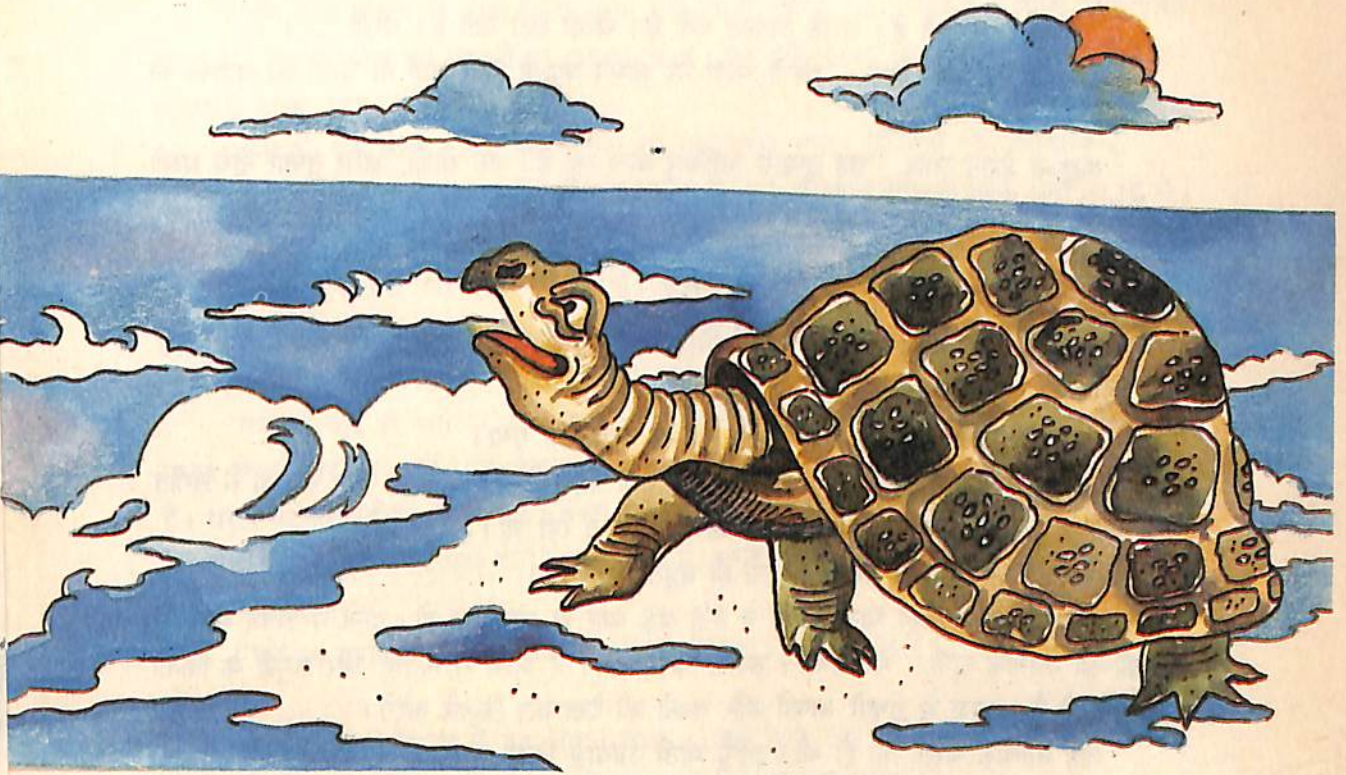
"मैं ताक़तवर हूँ।" पानी ने अकड़कर कहा, "मेरा यही काम है।"

"तुम्हारा काम शांत रहकर सबका भला करना है। हर अच्छे-बुरे जीव की प्यास बुझाना है। उसे नया जीवन देना है। फ़सलों को हरा-भरा रखना है, ताकि सबको खाने के लिए अनाज मिल सके। तुम्हारी उदारता ही तुम्हारी ताक़त है। लेकिन तुम तो विनाश को ही अपनी शक्ति समझने लगे हो। तुम्हारा तो काम है ... ।"

"बस, बस, मुझे अपना काम तुम-जैसे मतलबी से नहीं समझना।" पानी ने ज़ोर से अपनी लहर कछुए के मुँह पर मारी, "तुम तो यह भी भूल गये कि मेरे चलते तुम ज़िन्दा हो। मेरे कारण ही तुम साँसें ले रहे हो।"

कछुआ भी आज खरी-खरी सुनाने के लिए तैयार था। उसने कहा, "मैं ये साँसें धरती की हवा से लेता हूँ, तुम्हारे अन्दर भी और बाहर भी। अगर मैं तुम्हारी साँस लूँ तो डूबकर मर जाऊँगा।"

पानी की लहरें गुस्से में किनारे से खेलने लगीं और ऊँची-ऊँची उठने लगीं।

"तुमने धरती पर पैर क्या रख लिया, अब तुम धरती के ही गुण गाने लगे। तुम्हें किसी के

मान-सम्मान का भी कोई ध्यान नहीं रहा। क्या देती है धरती ?''

''धरती साँस देती है। धरती आसरा देती है। धरती रोटी देती है। धरती ....।''

पानी ने उसे टोक दिया, ''धरती भला मेरे सामने क्या है ? मैं चाहूँ तो धरती को बहाकर ले जाऊँ।''

कछुआ हँसने लगा, ''यह तुम्हारा अहंकार बोल रहा है। ज़रा सोचो, अगर तुम्हारे नीचे धरती न होती तो तुम कहाँ चले जाते ?''

पानी और भी तिलमिला उठा, ''जा और धरती को ही बता दे कि वह तुझे सँभालकर रखे। मेरे पास क्या लेने आया है तू ?''

''धरती तुम्हारे-जैसी नहीं कि अपना चेहरा बदलती रहे। उसका दिल बहुत बड़ा है। उसके पास हरेक के लिए बहुत जगह है।''

कछुए ने पत्नी को साथ लिया और नदी से बाहर आ गया।

बाहर रात डेरा डाल चुकी थी। मीठी-मीठी हवा बह रही थी। हवा की ताल से पत्तों से संगीत फूट रहा था। तारों की चमक धरती को मद्धिम रोशनी दे रही थी।

कछुआ और उसकी घरवाली दोनों ही बहुत उदास थे।

अचानक उन्हें लगा मानों किसी ने उन्हें बड़े प्यार से सहलाया हो। दोनों ने अपने कानों में हल्की-सी आवाज़ सुनी, ''मेरे बच्चो ! उदास मत होओ। मैं आज से नदियों और समुद्रों के किनारे तुम्हें सौंपती हूँ। आज से तुम्हारे अण्डों और बच्चों की देखभाल किनारे करेंगे।''

यह आवाज़ धरती की ही थी। इतनी मीठी आवाज़ किसी दूसरे की नहीं हो सकती थी।

कछुए की पत्नी अण्डे देने के लिए बड़े चाव से गड्ढा खोदने लगी। उसके पिछले पैर जल्दी-जल्दी चलने लगे।

नदी का पानी उनके पास पहुँचने की कोशिश कर रहा था।

वह कुछ और दूर चली गयी, ताकि उसके अण्डे पानी की पहुँच से दूर हो जायें। उसने गड्ढा खोदा और गड्ढे को दूध-जैसे सफ़ेद, गोल-मटोल अण्डों से भर दिया। उसने अपने अण्डों को ममतामयी नज़रों से देखा, मख़मली पैरों से सहलाया और फिर रेत से ढक दिया।

अब वह जाकर कछुए के पास बैठ गयी। अण्डों में से बच्चे निकलने में साठ दिन लगेंगे, वे इतने दिन सूखी रेत पर बैठकर क्या करेंगे ?''

उन्हें अपने पानी की बहुत याद आयी।

''पानी मुझे प्यार से कछुई कहता था।''

''हूँ।''

''तुम भी तो बस मुँह उठाकर चल पड़े !''

वह चुप रहा।

"सदियों का रिश्ता इतनी जल्दी टूटता है क्या ?"

"तुम ठीक कहती हो, मुझे इतना गुस्सा नहीं करना चाहिए था।" कछुए ने ठण्डी आह भरते हुए कहा, "उसके साथ हम कितनी दूर तक घूमते थे। वह हमें कितना प्यार करता था और मैं बेकार ही उससे उलझ गया।"

पानी की एक लहर आयी और उनके पैरों तक पहुँच गयी, "मैं तुम्हें लेने आया हूँ।"

दोनों डर गये। उन्हें ख़्याल ही नहीं रहा था कि वे जाने-अनजाने नदी की तरफ़ चले जा रहे थे।

"लेकिन ... लेकिन ... !" कछुए की आवाज़ लड़खड़ायी।

"मैं अब तुम्हारी कोई बात नहीं सुनूँगा। कुछ मालूम भी है, मैं कितना अकेला रह गया था। मैं अपनी ग़लती मानता हूँ। मैं क्या करूँ, कभी-कभी मेरा अपने पर काबू नहीं रहता। अब गुस्सा थूक दो।" पानी ने अपनेपन से कहा, "कछुई, तुम ही इसे कुछ समझाओ।"

कछुआ खुद ही शर्मसार था। पानी के ममत्व के आगे उसकी आँखें भर आयीं। धरती की ममता से भी वह मुँह नहीं मोड़ सकता था। वह धीरे-से बोला, "अब हम धरती से ही जुड़ गये हैं। धरती के पास माँ का आँचल है। आज से कछुओं के अण्डे भी धरती ही सँभालेगी और कछुओं के बच्चे भी धरती पर ही पैदा होंगे। हमें धरती ने अगर एक बार सहारा दे दिया है तो हम पीछे नहीं हट सकते।"

"लेकिन पानी से भी हमारा रिश्ता नहीं टूट सकता। मुझे मालूम है।" कछुए की पत्नी जल्दी से बोली।

कछुआ गहरी चिन्ता में पड़ गया। बोला, "मुझे कुछ सूझ नहीं रहा कि मैं क्या करूँ ?"

"मुझे मालूम है," पानी हँसा, "मैं बताता हूँ कि तुम क्या करोगे।"

दोनों ने बड़ी आशा से पानी की तरफ़ देखा।

"जो काम धरती ने सँभाला है, वह काम आज से धरती को ही करने दो।" पानी ने कहा, "लेकिन कछुओं की उम्र हमेशा पानी के साथ बीतेगी। पानी का यह हक़ बना रहेगा। कछुओं के बच्चे धरती पर पैदा होकर भी जन्म लेते ही पानी की तरफ़ दौड़ेंगे। पानी ही उनका असली घर होगा।"

ये दोनों सच अपनी-अपनी जगह पर थे।

अब घर लौटने का समय था।

कछुए की घरवाली वहाँ जाकर बैठ गयी, जहाँ रेत के नीचे उसके अण्डे थे। उसने रेत के साथ मुँह लगाकर धीरे-से अण्डों को कहा, "मेरे लाडलो ! हम नदी में जा रहे हैं। डरना मत ! धरती भी अपनी है और पानी भी। कुछ दिनों बाद तुम भी हमारे पीछे-पीछे आ जाना।"

नदी में पैर रखने से पहले दोनों ने मुड़कर देखा। कछुई ऊँची आवाज़ में बोली, "इनका ख़याल रखना।"

उसने यह बात पता नहीं किसे कही ? रात को, तारों को, हवा को, पेड़ों को या शायद धरती को। लेकिन एक बात तय थी कि अब सब-के-सब ही रेत के नीचे पड़े अण्डों का ख़्याल रखेंगे।

लगभग साठ रातें चुपचाप निकल गयीं और फिर रेत के नीचे पड़े अण्डे धीरे-धीरे फूटने शुरू हो गये। पहले रेत में से एक छोटा-सा सिर बाहर निकला, फिर एक-एक करके बहुत-से छोटे-छोटे कछुए बाहर आ गये। रास्ता ढूँढ़ने की होड़ में एक-दूसरे से टकराने लगे।

तारों की रोशनी में उस रात ने बहुत-से छोटे-छोटे कछुओं को आगे-पीछे नदी की तरफ़ जाते हुए देखा।

चालाक लोमड़ी चालाको

लोमड़ी बाहरवाले जंगल में रहती थी।

वह स्वभाव की भी चालाक थी और उसका नाम भी था चालाको। छोटे-छोटे जीव-जंतु उसके नाम से डरते थे। जो भी उसके शिकंजे में आ जाता था, वह उसे मारकर खा जाती थी। उसके मन में किसी जीव के लिए दया नहीं थी।

एक बार चालाको लोमड़ी रातभर शिकार की तलाश में घूमती रही। शिकार हर बार उसकी पकड़ में आकर निकल जाता था। जब वह बहुत थक गयी तो उसने नदी का पानी पिया। फिर भूखे पेट झाड़ियों में पड़कर सो गयी।

पंखों की फड़फड़ाहट सुनकर सुबह जल्दी ही उसकी नींद खुल गयी। एक जंगली मुर्ग़ा साथ वाली झाड़ी में से उड़ान भरकर वृक्ष की टहनी पर जा बैठा।

मुर्ग़े के नीले, पीले और लाल पंख पौ फटने की लाली में चमक रहे थे। उसके सिर पर सुर्ख़ लाल कलगी थी, लेकिन चालाको लोमड़ी को मुर्ग़े की सुन्दरता से कोई मतलब नहीं था। मुर्ग़े को देखते ही उसकी भूख जाग उठी।

जहाँ मुर्ग़ा बैठा था, वहाँ टहनी बहुत ऊँची नहीं थी। चालाको लोमड़ी को विश्वास था कि वह छलाँग लगाकर मुर्ग़े को दबोच लेगी।

जिस टहनी पर मुर्ग़ा बैठा था, उसके नीचे नदी की तेज़ धारा बहती थी, लेकिन लोमड़ी का पूरा ध्यान मुर्ग़े की तरफ़ था। उसने सारी ताक़त लगाकर छलाँग लगायी। मुर्ग़ा आनेवाले ख़तरे को भाँपकर पहले ही सचेत हो गया। पंख फड़फड़ाकर वह उड़ा और दूसरी टहनी पर जा बैठा।

चालाको लोमड़ी कुछ देर तक टहनी को पकड़े लटकती रही। जब उसकी बाँहें थक गयी तो वह नदी में गिर पड़ी। उसने किनारे पर आने के लिए हाथ-पैर मारे, लेकिन नदी का बहाव उसे बहाकर ले गया।

डुबकियाँ लगाते हुए उसका हाथ एक लकड़ी पर पड़ गया। वह लकड़ी के साथ चिपट गयी और बेहोशी की हालत में नदी में बहती चली गयी। पानी के बहाव और तेज़ हवा के थपेड़ों ने उसे जंगल टापू के रेतीले किनारे पर जा फेंका।

जब चालाको लोमड़ी को होश आया तो उसने देखा कि उसके आसपास जानवरों की भीड़ लगी हुई है। वह हैरान रह गयी। एक-से-बढ़कर एक सुन्दर जानवरों में हरिन, बन्दर, ख़रगोश,

साही, बत्तख़ और भी न जाने कितने ही जानवर थे। भूख से बेहाल लोमड़ी का मन किया कि वह दो-चार को दबोचकर अपना पेट भर ले, लेकिन उससे उठा नहीं जा रहा था। उसका सारा शरीर मारे दर्द के टीस रहा था।

नज़रें नीचे किए ही उसने सभी की तरफ़ देखा। उन सभी को किसी ख़तरे के बारे में मालूम नहीं था। उनको देखकर चालाको लोमड़ी हैरानी में पड़ गयी। उसे बड़ा अजीब लग रहा था कि वे सभी एक दूसरे को मार क्यों नहीं रहे थे। वे एक-दूसरे से डर क्यों नहीं रहे थे। वे तो चालाको लोमड़ी से भी नहीं डर रहे थे।

उसे होश में आया देखकर बन्दर ने पूछा, ''तुम कौन हो ?''

''मेरा नाम है चालाको। मैं बाहरवाले जंगल की लोमड़ी हूँ।''

चालाको लोमड़ी पशुओं के भोलेपन का अंदाज़ा लगा चुकी थी। उसने पहले से ही अपनी योजना बना ली थी। उसने एक कहानी गढ़ते हुए कहा, ''बाबा, मेरी दुखभरी कहानी बस इतनी ही है कि जब मैं घास खाकर पानी पीने लगी थी ... ।''

''घास खाकर !'' बूढ़े ख़रगोश ने लोमड़ी के नाख़ूनों की ओर देखा।

लोमड़ी हँसने लगी, ''पेट भरने के लिए घास नहीं खाऊँगी तो और भला क्या खाऊँगी ?''

बूढ़े ख़रगोश ने उसके तीखे दाँतों की तरफ़ देखा, ''चालाको, तुम्हारे दाँत और नाख़ून तो बहुत पैने हैं। तुम्हारे दाँतों और नाख़ूनों की बनावट तो घास खानेवाले जानवरों-जैसी नहीं है।''

चालाको लोमड़ी बूढ़े ख़रगोश की बात सुनकर झेंप गयी। उसने अपने दाँत और नाख़ून छिपाने की कोशिश की और धीरे से बोली, ''नाख़ून और दाँत तो भगवान ने बनाये हैं।''

इस बीच सभी जानवरों के बीच चालाको लोमड़ी के दाँत और नाख़ूनों के बारे में खुसर-फुसर होने लगी।

बत्तख़ ने क्वैक-क्वैक की, ''तुम लोग पहले उसकी पूरी कहानी तो सुन लो।''

बत्तख़ की बात सुनकर सब चुप हो गये।

चालाको लोमड़ी ने अपनी बात फिर से शुरू की, ''मैं घास खाकर पानी पीने लगी थी कि नदी में गिर पड़ी। पानी में बहती-बहती यहाँ तक आ गयी हूँ। अब आप लोग रखो, चाहे मारो। मैं आप लोगों के अधीन हूँ, लेकिन मुझे थोड़ी घास ज़रूर दे दो। मुझे बड़ी भूख लगी है।''

जानवरों का मन पसीज गया।

ख़रगोशों ने घास लाकर चालाको लोमड़ी के आगे डाल दी। लोमड़ी दिखावा करती हुई घास चबाने लगी।

सारे जानवर एक-एक कर अपने-अपने ठिकाने पर जाने लगे।

बूढ़ा ख़रगोश अब भी गहरी सोच में डूबा हुआ था। वह वहीं बैठा रहा। बोला, ''बाहर वाले जंगल से जो भी आया है, हमारे लिए मुसीबत लेकर ही आया है। वहाँ अच्छे जानवर नहीं

रहते। तुम घास खाकर वापस चली जाओ।''

कोई दूसरा समय होता तो लोमड़ी झपट्टा मारकर बूढ़े ख़रगोश को दबोच लेती और मार डालती। लेकिन निढाल देह की वजह से उसका हिलना भी मुश्किल हो गया था। उसने मायूसी से कहा, ''पत्थरों से टकरा-टकराकर मुझे बहुत चोटें आयीं हैं । मैं बहुत कमज़ोर हो गयी हूँ। मुझे कुछ दिन यहाँ रह लेने दो। ठीक होने के बाद मैं अपने-आप चली जाऊँगी।''

बूढ़ा ख़रगोश नज़रों से ओझल हुआ तो उसने अपने मुँह में जमा की हुई घास थू-थू करके थूक दिया।

दूर तक हरे-भरे फल-फूल थे, नरम-नरम घास थी। पेड़ों पर पक्षियों के घोंसले थे। वे गीत गुनगुनाते पत्तों में आँखमिचौनी खेल रहे थे। नीचे जानवर बेझिझक घूम रहे थे। प्रकृति ने चारों तरफ़ अपनी सुन्दर छटा बिखेर रखी थी। हर जगह बड़ी शांति, थी जो चालाको लोमड़ी ने बाहरवाले जंगल में कभी भी महसूस नहीं की थी। लेकिन चालाको लोमड़ी का इस शांति के साथ कुछ लेना-देना नहीं था। वह अपने पेट की भूख के सिवा कुछ भी सोच नहीं सकती थी।

ख़रगोश दिन भर उसकी नज़रों के सामने घास पर खेलते रहे। अपने छोटे-छोटे दाँतों के साथ घास कुतरते रहे और शाम तक थक-हारकर अपनी खोहों में चले गये।

धीरे-धीरे अँधेरा हो रहा था।

पेट ख़ाली होने के कारण चालाको लोमड़ी और भी निढाल हो गयी। शरीर की कमज़ोरी और चोटों के कारण वह खड़ी भी नहीं हो पा रही थी। उसे ख़ुद पर तरस आने लगा।

उसी समय एक ख़रगोश अपनी खोह की ओर लौट रहा था। उसे चालाको लोमड़ी के बारे में कुछ मालूम नहीं था। उसने उत्सुकतावश लोमड़ी की ओर देखा और धीरे-धीरे उसके पास चला गया। लोमड़ी मुस्करायी तो वह बेझिझक उसके और नजदीक चला गया।

चालाको लोमड़ी ने एक बार चारों ओर देखा और फिर ख़रगोश को पंजों में दबोच लिया।

सुबह तक लोमड़ी के शरीर में ताक़त लौट आयी। अब उसका पेट भी ख़ाली नहीं था। उसने उठकर जँभाई ली और जंगल की ओर चल पड़ी।

जंगल टापू में सब कुछ पहले-जैसा था। चिड़ियाँ पहले की तरह ही एक टहनी से दूसरी टहनी पर फुदक रहीं थीं। तोते पहले की तरह ही आम कुतर रहे थे। बन्दर पहले की तरह ही पेड़ों पर झूल रहे थे, छलाँगे लगाते शरारतें कर रहे थे। ख़रगोशों में एक भय-सा छाया हुआ था। कुछ दिनों से ख़रगोश एक-एक करके गुम हो रहे थे। जंगल की तरफ़ अकेला गया ख़रगोश कभी लौटकर घर नहीं आया था।

वहाँ कोई अनदेखा दुश्मन था, जिसके बारे में किसी को कुछ मालूम नहीं था।

चालाकों लोमड़ी दिन के समय मासूम ख़रगोशों के साथ ख़ूब खेलती थी। उन्हें हर प्रकार

से हँसाने की कोशिश करती। उनके साथ बैठकर वह घास खाने का दिखावा भी करती थी। उसके ऊपर कोई शक़ भी नहीं करता था।

हालत दिन-ब-दिन भयानक हो रही थी। जंगल में जगह-जगह ख़रगोशों की चूसी हुई हड्डियाँ दिखायी दे रही थीं। अनेक खोहें खाली हो गयी थीं। लेकिन ख़रगोशों को अपने दुश्मन का कुछ अता-पता नहीं था। वे सचमुच बहुत भोले थे। वे दिन के समय अपनी मुसीबत भूल जाते और रात के समय ख़तरों में घिर जाते।

एक दिन भोलू, पीला, छोटू और दूसरे कई ख़रगोश खेलते-खेलते दूर निकल गये थे । लौटते समय बहुत अँधेरा हो गया। रास्ते में उन्होंने एक भयानक दृश्य देखा। वे सहमकर ठिठक गये। चालाको लोमड़ी किसी अकेले ख़रगोश की ताक में घात लगाये बैठी थी। उसने उछलकर एक

ख़रगोश पर झपट्टा मारा और उसकी चीर-फाड़ करने लगी। ख़रगोशों के सामने अपने साथी ख़रगोशों के गुम होने का भेद एकदम खुल गया। वे इतने गुस्से में आ गये कि उन्हें अपने ख़रगोश होने का भी ध्यान नहीं रहा। वे सब-के-सब लोमड़ी पर टूट पड़े। उन्होंने अपने छोटे-छोटे दाँतों से चालाको लोमड़ी को लहूलुहान कर मार डाला।

लोमड़ी के मरने की ख़बर जंगल टापू में फैल गयी। सारे जानवर बूढ़े ख़रगोश के पास इकट्ठे हो गये। भोलू, डब्बू, पीला, छोटू और कई ख़रगोश अपने बाबा से सटकर बैठे हुए थे। सभी जानवरों को बहुत दिनों बाद बूढ़े ख़रगोश के चेहरे पर ख़ुशी की चमक दिखायी दी थी। यही ख़ुशी सभी जानवरों के मन में थी। चालाको लोमड़ी अवसर मिलने पर उनका भी शिकार कर डालती।

किसी भी जंगल के इतिहास में शायद यह पहला मौक़ा था कि ख़रगोशों के हाथों लोमड़ी मारी गयी थी। बूढ़े ख़रगोश ने कहा, "यह ताक़त ख़रगोशों की नहीं, एकता की है। ख़रगोश चाहें तो एकता की ताक़त के बल पर शेर को भी मार सकते हैं।"

जंगल टापू के अपराधी

चील और चूहे की दोस्ती बहुत गहरी थी।

यह उन दिनों की बात है, जब चील अभी मांसाहारी नहीं हुई थी और चूहा बेईमान नहीं बना था। एक दोपहर दोनों बैठे सर्दी की धूप सेंक रहे थे।

चूहे ने कहा, "हम दोनों इकट्ठे रहा करेंगे।"

"अहा, फिर तो बड़ा मज़ा आयेगा।" चील ने पंख फैलाकर हामी भरी, "हम दोनों घोंसले में रहेंगे।"

"मेरे तो पंख नहीं हैं। मैं तो उड़ भी नहीं सकता।" चूहे ने अपनी शंका जतायी, "मैं तुम्हारे घोंसले तक पहुँचूँगा कैसे ?"

"मैं तुम्हें पंजों से उठाकर ले जाया करूँगीं," चील ने आसान-सा हल बता दिया।

"ना बाबा !" चूहे ने सहमकर कहा, "मैं ऊपर से गिर पड़ा तो मेरी हड्डी-पसली चकनाचूर हो जायेगी।"

चील हँसने लगी, "तुम बहुत डरपोक हो। मैं जो हूँ ! तुम्हारा पूरा ध्यान रखूँगी।"

"... लेकिन बरसातों में ... ! बरसातों में तो पूरा भीग जाया करूँगा। वैसे भी इतनी ऊँची जगह पर बहुत हवा लगेगी।" चूहे ने कहा। फिर अपना डर बताते हुए सलाह दी, "हम दोनों बिल में रहें। वहाँ न भीगने का ख़तरा है और न सर्दी का डर।"

चील ज़ोर से हँसी, "मैं तुम्हारी तंग बिल में जाऊँगी कैसे !"

चूहे ने आँखें झपकायीं और ज़मीन सूँघने लगा।

लेकिन चूहा इस तरह चुप होकर बैठनेवाला नहीं था। वह बूढ़े ख़रगोश से मिला और उसे अपनी समस्या बतायी।

बूढ़े ख़रगोश ने कहा, "तुम्हारी और चील की दोस्ती तो जंगली जानवरों के लिए अच्छी मिसाल है। तुम दोनों के लिए मुझसे जो भी बन पड़ेगा, मैं करने को तैयार हूँ।"

"बाबा, यदि हमें एक खोह मिल जाये तो हम दोनों इकट्ठे रह सकते हैं।"

बूढ़े ख़रगोश ने ख़ुशी-ख़ुशी एक खुली खोह चूहे के लिए ख़ाली करवा दी। चूहा चील को खोह दिखाने के लिए ले आया।

"देख, हमें इतना सुन्दर घर कहीं और नहीं मिल सकता। मैं इसे थोड़ा-सा और खुला कर

दूँगा।'' चूहा चील को खोह के अन्दर ले गया और बोला, ''आगे खुली जगह में हम दोनों रह लिया करेंगे। पीछे दाने रखने के लिए जगह है। यहाँ हमें न तो आँधी-पानी का डर रहेगा, न सर्दी का।''

खोह चील को भी पसन्द आयी। दोनों वहाँ रहने लगे।

एक दिन चूहे ने कहा, ''मौसम धीरे-धीरे ख़राब हो रहा है। बरसात का मौसम शुरू होने वाला है। हमें चाहिए कि बरसात शुरू होने से पहले ही दाने जमा कर लें। बरसात के दिनों में हम अन्दर बैठकर मज़े से खाया करेंगे।''

चूहे की सलाह चील को पसन्द आ गयी।

दोनों सुबह-सुबह ही दाने इकट्ठे करने निकल जाते। वे दिन भर ख़ूब मेहनत करते। कुछ दिनों में ही उन्होंने खोह में दानों का ढेर लगा लिया। यह दोनों की साझी मेहनत का नतीजा था। वे शाम को इकट्ठे बैठते और इसे देख-देखकर ख़ुश होते।

एक दिन चूहा बीमार पड़ गया। चील ने कहा, ''तुम घर पर रहकर आराम करो। मैं ख़ुद ढेर-से दाने इकट्ठे कर लूँगी।''

चील सारा दिन अकेले ही दाने इकट्ठे करती रही। चूहा खोह में पड़ा आराम करता रहा।

शाम तक चूहा काफ़ी ठीक हो गया। अगले दिन सुबह तक वह बिल्कुल तन्दुरुस्त था, लेकिन उसका काम करने का मन नहीं था। वह कई दिनों तक चील को बीमारी का बहाना करता रहा। चील के जाने के बाद ख़ाली बैठा ख़ूब दाने खाता रहता।

चूहे को मालूम नहीं था कि ख़ाली दिमाग़ शैतान का घर होता है। उसे इस ख़ालीपन से बचना चाहिए था, लेकिन वह तो उल्टे काम से बचने के लिए योजनाएँ बनाने लगा।

एक दिन उसने चील को कहा, ''मैं अब बिलकुल ठीक हूँ। मेरे बीमार होने से दाने बहुत बिखर गये हैं। हम आपस में काम बाँट लेते हैं। तुम बाहर से दाने इकट्ठा कर ले आना। मैं दानों की साज-सँभाल करता जाऊँगा।''

चील हामी भरकर दाने इकट्ठे करने के लिए उड़ गयी।

चील के चले जाने के बाद चूहे ने खोह में एक बिल बनानी शुरू कर दी और शाम तक उसे अपनी पहलेवाली बिल से अन्दर-ही अन्दर जोड़ दिया। चील की मेहनत से इकट्ठे किए दाने उसने ढोकर अपने बिल तक पहुँचा दिये।

उसके बाद उसने पहलेवाला ढेर भी ढोना शुरू कर दिया।

एक दिन चील ने ख़ाली हो रही खोह की ओर ध्यान से देखा और बोली, ''मैं कई दिनों से दाने इकट्ठे कर रही हूँ, लेकिन खोह में तो थोड़े-से ही दाने दिखायी दे रहे हैं।''

''नहीं, यह तुम्हारा वहम है।'' चूहे ने जल्दी से कहा, ''तुम आगे जाकर देख नहीं सकती न, इसलिए तुम्हें दाने थोड़े लग रहे हैं। मैं दाने बहुत अच्छी तरह से सहेज रहा हूँ। अन्दर से तो बिल दानों से भरी हुई है।''

चील ने खोह को पिछली तरफ़ से देंखने की कोशिश की, फिर चूहे की बात सच मानकर चुपचाप बैठ गयी।

चूहा पहले की तरह ही चील के जाने के बाद दाने ढोता रहा। खोह को पूरी तरह ख़ाली करने के बाद उसने उसे हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ दिया।

उस शाम चील वापस आयी तो उसका दोस्त चूहा वहाँ नहीं था। खोह में पड़े सारे दाने भी ग़ायब थे। दिनभर की उड़ान के बाद चील के पंख थके हुए थे। वह पंख फैलाये चूहे का इंतज़ार करने लगी। उसने सोचा तक नहीं कि चूहा उसे धोखा दे गया है।

उसने दिन भर इकट्ठे किये दानों में से कुछ-खाये और सो गयी।

रात भर चील सोचती रही और चूहे के आने का इन्तज़ार करती रही। सुबह उठते ही उसे चूहे के चले जाने का यक़ीन हो गया। उदास चील ने पंख समेटे और अपने पुराने घोंसले में जा बैठी।

बरसात अपने समय पर शुरू हो गयी। बारिश में भीगी चील भूखे पेट घोंसले में बैठी काँपती रही। खोह में इकट्ठे किये दाने वह कब की ख़त्म कर चुकी थी। उसके पास अब खाने के लिए कुछ भी नहीं था।

बारिश रुकी तो वह अपने खाने के लिए दाना ढूँढ़ने निकल पड़ी। वह बहुत देर तक इधर-उधर उड़ती रही लेकिन उसे कहीं से अनाज का एक दाना भी नहीं मिला। अचानक उसकी नज़र चूहे पर जा पड़ी। मुफ़्त का अनाज खाकर चूहे का पेट फूला हुआ था। वह अपने बिल के बाहर आँखें बन्द किये आराम कर रहा था।

चूहे को देखकर चील को गुस्सा आ गया। उसने झपट्टा मारकर चूहे को पंजों में दबोच लिया और उड़ चली।

गुस्से में बिफ़री चील ऊपर-ही-ऊपर उड़ती रही। चूहा उसके पंजों में से छूटने के लिए ज़ोर लगाता रहा और एकाएक चील के पंजों से छूटकर नीचे रेत पर जा गिरा। उसे चोट तो बहुत ज़ोर की लगी, लेकिन रेत पर गिरने के कारण उसकी जान बच गयी।

चूहे की चीख़-पुकार सुनकर कई जानवर और पक्षी इकट्ठे हो गए। चूहा कुछ सँभला तो चील के ज़ुल्म की कहानी सुनाने लगा।

चूहे की कहानी सुनकर जानवरों और पक्षियों को लगा कि चूहे के साथ बड़ा अन्याय हुआ है। जानवरों और पक्षियों की साझी अदालत न्याय करने के लिए बैठी।

चील को बुलावा भेजा गया।

अपनी सफ़ाई में चील ने चूहे के धोखे की कहानी सुना दी।

दोनों दोषी थे।

चील ने जीव-हत्या करने की कोशिश की थी। चूहे ने दोस्ती में दग़ा दिया था। वह मेहनत की जगह धोखेबाज़ी करता रहा।

सभी सिर जोड़कर सलाह करने लगे।

कौए ने काँव-काँव की।

उल्लू गहरी सोच में सिर हिलाता रहा।

बन्दर के दातों की किट-किट दूर तक सुनायी देती रही।

बूढ़े ख़रगोश ने बार-बार आँखें खोलीं और बन्द कीं।

हिरन अनमना-सा सिर हिलाता रहा।

लम्बी बहस के बाद बूढ़े ख़रगोश ने फ़ैसला सुनाने के लिए सिर ऊपर उठाया। उसकी गम्भीर आवाज़ गूँजी, ''इस मामले में हम सभी की एक ही राय है कि चूहा और चील दोनों ही जंगल टापू के अपराधी हैं। उनके ग़लत काम जंगल टापू के निश्छल वातावरण को ख़राब कर सकते हैं। इनकी गंदी हरकतें दूसरे जीवों में भी फैल सकती हैं। इसलिये यह ज़रूरी है कि इनको तब तक दूर रखा जाये, जब तक ये पहले की तरह ही अच्छे बनकर न दिखा दें। इनके साथ भाईचारा रखने की ... ।''

बूढ़े ख़रगोश की बात अभी अधूरी ही थी कि चील बात काटते हुए गुस्से से चीख़ी, ''यह क्या सज़ा हुई कि चूहा आराम से अपने बिल में बैठा दूसरे की मेहनत की कमाई खाता रहे। चूहे

को तो सज़ा मैं दूँगी। देखना, कैसे नोच-नोचकर मारूँगी।''

''तुम ऐसा नहीं कर सकती।'' बन्दर ने ऊँची आवाज़ में कहा।

''मैं ऐसा ही करूँगी।'' चील गुस्से से बोली, ''चूहा हराम की कमाई खायेगा तो मैं उसे खा जाऊँगी।''

बूढ़े ख़रगोश ने चिन्ता में डूबकर मुँह खोला, ''अगर तुम मांसाहारी हो गयी तो हम तुम्हारे नज़दीक भी नहीं रहेंगे।''

''तुम-जैसों के नज़दीक रहना भी कौन चाहता है?'' चील ने गुस्से और खीझभरे स्वर में कहा और उड़ गयी।

कुछ देर तक किसी को कोई बात नहीं सूझी। सभी भौंचक्के-से बैठे रहे। बूढ़े ख़रगोश ने अपने आपको सँभाला। अपनी बात पूरी करने के लिए वह उठा, लेकिन चूहा भी उसके न्याय का दण्ड लेकर जा चुका था।

चील सभी जीव-जन्तुओं से दूर पथरीले इलाक़े में, एक सूखे पेड़ पर बेढब-सा घोंसला बनाकर रहने लगी। चूहे के धोखे की सज़ा वह दूसरे चूहों को देने लगी। उसे कहीं भी चूहा नज़र आता, वह झपट्टा मारकर उसे दबोच लेती और नोच-नोचकर मार डालती।

और उस दिन से चील सचमुच मांसाहारी हो गयी।

चूहा निकम्मा और बेईमान ही बना रहा। वह दूसरों की मेहनत से इकट्ठा किया अनाज चुरा-चुराकर खाता रहा।

अब जंगल टापू के जीवों का चील और चूहे से कोई भाईचारा नहीं था। चील और चूहा अपने अन्दर के चोर की वजह से एक दूसरे से दूर-दूर रहते। उनका कोई दोस्त नहीं था। उन्हें कोई प्यार नहीं करता था।

लेकिन जंगल टापू के जानवरों को अभी भी उम्मीद है कि चील और चूहा पहले की ही तरह अच्छे दोस्त बन जायेंगे। फिर वे सब पहले की तरह ही मिलकर खेलेंगे और मिलकर हँसेंगे।

सतरंगी तितली

डब्बू ख़रगोश उस दिन शरारत करने के मूड में था। वह सतरंगी तितली को पकड़ने की कोशिश कर रहा था।

घास ने कहा, "तुम हमें कुचल रहे हो !"

पौधों ने कहा, "तुम हमारी टहनियाँ तोड़ रहे हो !"

डब्बू ख़रगोश ने किसी की बात न सुनी। वह किसी भी तरह तितली को पकड़ना चाहता था। तितली उड़कर कभी एक झाड़ी पर जा बैठती और कभी दूसरी पर, लेकिन डब्बू ख़रगोश उसे चैन से बैठने नहीं दे रहा था। तितली भी बार-बार अपने को बचाते हुए थक गयी थी। वह हाँफते हुए बोली, "डब्बू भैया, मैं तो बहुत छोटी हूँ।"

"हाँ, तुम बहुत छोटी हो !"

"तुम मुझे देख तो सकते हो न !"

"तुम इतनी छोटी भी नहीं कि मैं तुझे देख ही न सकूँ।"

तितली ने लम्बी साँस ली। बोली, "मैं संयोगवश तुम्हारे रास्ते में आ गयी थी। वैसे तुम्हारा मुझे तंग करने का कोई इरादा नहीं था। कहाँ तुम और कहाँ मैं।"

डब्बू ख़रगोश को तितली का मज़ाक़ समझ नहीं आया। वह छाती तानकर खड़ा हो गया और बोला, "इसमें क्या शक़ है। तू तो मेरे सामने कुछ भी नहीं।"

"तुम तो देखने में काफ़ी बड़े हो।"

"हाँ, बड़ा हूँ।"

"तुम तगड़े भी बहुत हो।"

"हाँ, तगड़ा तो हूँ ही।"

"मैं तो तुमसे कमज़ोर हूँ, फिर तुम मुझे तंग क्यों कर रहे हो।"

"बस, तुम्हें देखकर मुझे खीझ हो रही है। तुम तो बेकार की चीज़ हो। तुम्हें तो हवा भी जिधर चाहे, उड़ाकर ले जाये।"

"बेकार तो कुछ भी नहीं होता। हर जानवर की अपनी-अपनी जगह है, अपना-अपना काम है। छोटे-से-छोटे जीव की अपनी ताक़त है, जिसे बड़े-से-बड़ा जीव भी मात नहीं दे सकता।"

"ताक़त।" डब्बू ख़रगोश हँसने लगा "मुझे तुम्हारे अन्दर तो कोई ताक़त नज़र नहीं आती।"

"क्या मालूम !"

"अगर यह बात है तो फिर हो जाये मुक़ाबला। चल हमारी खोह तक, दोनों चलते हैं, देखते हैं, कौन पहले पहुँचता है।"

दोनों का मुक़ाबला शुरू हो गया।

डब्बू ख़रगोश पल-भर में ही छलाँगे लगाता नज़रों से ओझल हो गया।

सतरंगी तितली अपने पंख फड़फड़ाती पीछे उड़ चली। बहुत देर बाद जब वह दलदलवाले इलाक़े में पहुँची तो डब्बू ख़रगोश को देखकर हैरान रह गयी।

"तू थक गया है?" सतरंगी तितली ने पूछा।

"नहीं, आगे दलदल है।"

"तो क्या हुआ?"

"अगर मैंने दलदल में पैर रखा तो धँस जाऊँगा; फिर मुझसे निकला नहीं जायेगा।"

तितली उड़कर दलदल पर बैठ गयी, फिर बोली, "देखो, दलदल मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ रही।"

डब्बू ख़रगोश आँखें झपकाने लगा।

"मैं तो ऊपर से उड़कर भी दलदल पार कर सकती हूँ।"

''कोई बात नहीं। तुम फ़िक्र मत करो। तुम दूसरे रास्ते से चक्कर काटकर उस पार पहुँच जाओ। हम मुक़ाबला दुबारा शुरू करेंगे।'' तितली ने डब्बू ख़रगोश को ढाढ़स बँधाया।

डब्बू के जाने के बाद तितली उड़ी और दलदल के दूसरे पार पहुँच गयी। वह वहाँ बैठकर डब्बू ख़रगोश का इंतज़ार करने लगी।

दलदल के कारण डब्बू ख़रगोश को काफ़ी लम्बा चक्कर काटना पड़ा। बहुत इन्तज़ार के बाद वह पहुँचा तो बहुत थका हुआ था। सतरंगी तितली ने बड़े अपनेपन से कहा, ''डब्बू भैया, तुम कुछ देर आराम कर लो।''

डब्बू ने कुछ देर आराम किया और फिर उनका मुक़ाबला शुरू हो गया।

डब्बू पहले की तरह ही तेज़ दौड़ा और तितली की नज़रों से ओझल हो गया। वह बहुत देर तक उड़ती रही। आगे पहुँची तो उसे झील के किनारे डब्बू चिन्तित बैठा नज़र आया।

''तुम फिर रुके पड़े हो !'' तितली ने पूछा।

''आगे झील जो आ गयी है।''

''तो क्या हुआ ?''

''मैंने अगर पानी पर पैर रखा तो डूब जाऊँगा; फिर मुझसे निकला नहीं जायेगा।''

तितली उड़कर पानी पर तैर रहे एक पत्ते पर बैठ गयी और बोली, ''देख, झील मुझे कुछ भी नहीं कह रही।''

डब्बू ख़रगोश चुप रहा।

''मैं तो झील उड़कर भी पार कर सकती हूँ।''

''मैं उड़ नहीं सकता।'' डब्बू ख़रगोश की आवाज़ में बेबसी और बढ़ गयी।

''कोई बात नहीं। तुम फ़िक्र मत करो। तुम दूसरे रास्ते से झील के पार पहुँचो। वहाँ से हम मुक़ाबला फिर शुरू करेंगे।'' सतरंगी तितली ने डब्बू को अपनेपन से कहा।

डब्बू के जाने के बाद तितली उड़ी और झील की दूसरी ओर पहुँच गयी।

डब्बू का अभी दूर तक कहीं नामोनिशान भी नहीं था।

सामने फूलों की वादी थी। फूलों की वादी में ख़रगोशों की खोहें थीं। वह कुछ देर तक वहीं बैठी रही और फिर फूलों की तरफ़ उड़ चली। वह कभी एक फूल पर बैठती और कभी दूसरे पर।

दूर बैठा ख़रगोश चुपचाप तितली को देखता रहा। तितली उसके पास आयी तो वह मुस्कराया।

सतरंगी तितली एक फूल पर बैठ गयी, ''बाबा, यहाँ तो बहुत सुन्दर फूल हैं।''

''हाँ, बहुत सुन्दर हैं। बिल्कुल तुम्हारे सतरंगी पंखों की तरह।'' बूढ़ा ख़रगोश हँसा, ''अगर तुम्हें ये फूल अच्छे लगते हैं तो यहीं रह जाओ।''

''इतने सुन्दर फूलों में रहने का मेरा भी दिल करता है, लेकिन ... ।''

''लेकिन क्या ?''

सतरंगी तितली अभी मुँह खोलने ही वाली थी कि डब्बू हाफता-हाँफता वहाँ पहुँच गया और बोला—''चल, अब फिर यहाँ से शुरू करते हैं।''

''इससे आगे तो नदी है।''

डब्बू ख़रगोश को नदी का ध्यान ही नहीं रहा था। उसने हारे हुए की तरह सिर नीचा कर लिया।

''डब्बू, मुझे मालूम है कि तुम बहुत तेज़ दौड़ते हो। मैं हार मान लेती हूँ।'' तितली उड़कर उसके पास जा बैठी, ''अब तो खुश हो !''

डब्बू ख़रगोश ने हैरान होकर तितली की तरफ़ देखा।

''मुझे भोले-भाले ख़रगोश बहुत अच्छे लगते हैं। तुम्हारी हँसी सारे जंगल टापू में खनकती रहती है। तुम्हारी मीठी-मीठी शरारतें गुदगुदाती रहती हैं। जंगली जीव तुमसे हँसना सीखते हैं। तुम्हें देखकर सबको ख़ुशी मिलती है।''

सतरंगी तितली मुस्करायी, ''अगर ख़रगोश मेरे मित्र बन जायें तो मैं यहाँ रह जाऊँगी, नहीं तो चली जाऊँगी।''

बूढ़े ख़रगोश को मालूम नहीं था कि डब्बू और सतरंगी तितली के बीच में क्या बात हुई है ? वह बोला, ''सतरंगी, तुम्हें यह कहने की क्या ज़रूरत है। हम तो सबके दोस्त हैं, फूलों के भी, तितलियों के भी। अगर तुम हमारे नजदीक नहीं रहोगी तो हम कितने रूखे-सूखे हो जायेंगे। अगर तितलियाँ अपने पैरों से फूलों का पराग एक फूल से दूसरे फूल तक न ले जायें तो फूलों में बीज कैसे बनेंगे ? फूल कैसे खिलेंगे ? जंगल टापू सुन्दर कैसे लगेगा ? तुम यहीं रहो। वास्तव में यह जंगल तुम्हारा ही है।''

डब्बू मारे शर्म के सिर झुकाये बैठा था। वह बोला, ''सतरंगी, जो बात तुम समझाना चाहती थी, वह मेरी समझ में आ गयी है। मैं अपनी अकड़ में मूर्ख बना बैठा था। तुम तो हारकर भी जीत गयी हो। इस ताक़त के सामने तो कोई भी मात खा जाये।''

''डब्बू भैया, तुमने यह कहकर अपने आप ही एक और ताक़त हासिल कर ली है। अब मैं यहीं रहूँगी, तुम्हारे फूलों के साथ।''

''चल, मैं तुम्हें दूसरों से भी मिलवाऊँ।''

सतरंगी को अपने ऊपर बिठाकर डब्बू छलाँग लगाता उसे दूसरों से मिलवाने के लिए चल पड़ा।

बूढ़ा ख़रगोश कुछ हैरान-सा दोनों को जाते हुए देखता रहा।

साही, कौआ और आदमी

एक बार बाहरवाले जंगल से कुछ अजीब से जानवर नदी पार कर जंगल टापू में पहुँच गये।

उन्हें सबसे पहले कौए ने देखा। उसने काँव-काँव करके उनकी पहचान बता दी।

"आदमी !"

"आदमी !"

"आदमी !"

जंगल टापू के बाक़ी कौए भी जंगली जानवरों को सचेत करने के लिए काँव-काँव करने लगे।

आदमियों ने कानों पर उँगलियाँ रख लीं।

जंगली जीव भागकर झाड़ियों में जा छिपे। झाड़ियों में से वे आदमियों को देखने लगे। आदमी एक लम्बा-सा जीव था। वह केवल दो पैरों पर चलता था। उसके दो पैर उसके साथ लटकते रहते थे। उसके शरीर पर न पंख थे और न बाल। पंख और बालों के बिना वह भद्दा और फूहड़ लगता था। लेकिन किसी-किसी को देखकर डर भी लगता था। कुछेक के हाथों में डण्डे-से थे। जानवरों ने पहले भी इन डण्डों को हैरानी से देखा था। अब वे डण्डों को देखकर सहम जाते थे और छिपने के लिए दौड़ पड़ते थे।

आदमी डण्डे का निशाना जानवरों की तरफ़ करके घोड़ा दबाता तो डण्डे में से आग-सी निकलती। फिर खटाक की आवाज़ के साथ दूर बैठा जानवर तड़पने लगता। उसमें से एक व्यक्ति आगे बढ़कर मरे हुए जानवर को टाँगों से पकड़कर उठा लेता तो सभी ख़ुश हो जाते। वे केवल ख़ूँख़ार ही नहीं थे, पागल भी थे।

वे सारा दिन हाथों में नक्शे, काग़ज़ और फीता पकड़े जंगल टापू में घूमते रहते थे। कभी वे नक्शा बिछाकर ऊपर फीता रख देते थे और फिर उँगलियों से इशारे करते हुए ऊँची आवाज़ में बोलने लगते। कभी वे चुपचाप काफ़ी समय तक लिखते ही रहते थे।

जंगल टापू के बहुत-से जानवर आदमियों के ख़तरे से सचेत हो चुके थे। जंगल में एक साही भी था। बड़ा ही मस्त। उसे अभी तक आदमियों के बारे में कुछ मालूम नहीं था।

साही अपनी बिल से बाहर निकला और खुले मैदान में बैठकर मस्त हवा का आनंद लेने लगा। उसे आदमियों के जंगल टापू में आने का पता तब चला जब उसे एक तेज़ ठोकर लगी।

दो आदमी दिन का काम ख़त्म करके वापस जा रहे थे। वे नक्शेवाले झोले कन्धे पर लटकाये

हुए धीरे-धीरे चले जा रहे थे। साही को रास्ते मे बैठा देखकर वे दोनों रुक गये। एक ने भारी जूते से साही को ठोकर लगायी तो साही गेंद की तरह लुढ़कता हुआ दूर जा गिरा।

साही के शरीर पर सलाई की तरह लम्बे-लम्बे तीखे काँटे थे। उसके काँटे बचाव के लिए खड़े हो गये। उसने सिर और पैर शरीर के अन्दर खींच लिये। वह बिल्कुल गोल-मटोल हो गया। उसे दुश्मन से बचने का बस यही एक तरीक़ा मालूम था।

वह स्थिर पड़ा एक बेजान पत्थर लग रहा था। आदमी उसके तीखे काँटों को हाथ तो लगा नहीं सकते थे। हाँ, अपने भारी-भरकम जूतों से साही को ठोकर लगा सकते थे।

वे साही को ठोकरें लगाकर लुढ़काने लगे। अचानक एक आदमी रुककर बोला, ''तुमने ऐसा जानवर पहले भी कभी देखा है ?''

''नहीं''

''क्या मालूम, यह चिड़ियाघर में न हो !''

''शायद।''

''अगर मैं इसे ले जाकर चिड़ियाघर में बेच दूँ तो मुझे अच्छे पैसे मिल सकते हैं।''

दूसरे आदमी के दिमाग़ में यह बात आयी ही नहीं थी। वह जल्दी से बोला, ''इसे पहले मैंने देखा था। पहली बार ठोकर भी मैंने लगायी थी। इस पर मेरा हक़ बनता है। इसे मैं बेचूँगा।''

वे दोनों इसी बात पर लड़ने लगे। जब वे लड़ते-लड़ते थक गये तो एक ने समझदारी दिखाते हुए कहा, ''हम लड़ क्यों रहे हैं ? क्यों न इसे बेचकर जितने भी रुपये मिलें, उन्हें हम आधे-आधे बाँट लें।''

दूसरा मान गया।

पहले ने सिर से अपना टोप उतारा और साही को पैर से खिसकाकर हैट में डाल दिया। साही को लेकर वह कैम्प में पहुँच गया और उसे तम्बू में एक तरफ ज़मीन पर रख दिया। साही बिना हिले-जुले ज़मीन पर पड़ा रहा।

दोनों आदमी कुछ देर तक साही को देखते रहे और फिर नहाने के लिए नदी की ओर चले गये।

कौआ सारा दिन जंगल टापू के जानवरों को इन आदमियों के बारे में बताता जगह-जगह घूमता रहा। शाम तक उसे बहुत भूख लग गयी। वह आदमियों के शिविर की तरफ़ आ गया। वहाँ उसे खाने के लिए कुछ-न-कुछ मिल ही जाता था। वह इसी ताक में तम्बू के पासवाले पेड़ पर बैठ गया। उसने दो आदमियों को तम्बू में घुसते देखा। उनमें से एक ने साहीवाला टोप उठाया हुआ था।

कौए ने साही की दुर्गति का अंदाज़ा लगा लिया। साही बड़ा ही भला जानवर था। वह किसी के साथ बुरा नहीं करता था। ऐसे अच्छे जानवर की साथ कभी बुरा नहीं होना चाहिए। कौआ अपनी भूख-प्यास भूल गया। वह साही को बचाने का मौक़ा तलाश करने लगा।

जब आदमी नदी पर नहाने चले गये तो कौआ तम्बू के अन्दर पहुँच गया। साही गोल-मटोल

हुआ पड़ा था। कौए ने कई आवाज़ें लगाई तब जाकर साही ने अपनी काली शक्ल को काँटों से बाहर निकला। उसने डरते हुए चारों तरफ़ अपनी नज़रें घुमायीं।

कौए ने ढाढ़स बँधाया, ''अब तुम घबराओ मत। वे लोग नहाने-धोने गये हुए हैं। तुम ज़ल्दी से भाग जाओ।''

साही को तम्बू के एक कोने से मीठे-मीठे दूध की ख़ुशबू आ रही थी। उसने मासूम आँखों से कौए की तरफ़ देखा, ''क्या मैं दूध पी लूँ?''

कौआ बोला, ''जब कोई दुश्मन के चंगुल में फँस जाये तो उसे जान बचाने का पहला मौक़ा मिलते ही भाग जाना चाहिए। अपनी जान के मुकाबले में खाने को कभी अहमियत नहीं देनी चाहिए।''

''उन्होंने मुझे बहुत मारा-पीटा है। अगर मैं दूध पी लूँगा तो मुझमें ताक़त आ जायेगी और मैं जल्दी से भाग सकूँ।'' साही बोला, ''और दूध तो वैसे भी बहुत मीठा होता है।''

कौए ने पैर से पतीले का ढक्कन उतार दिया और खीझकर बोला, ''अब जल्दी से दूध पी लो और भागो। मैं बाहर देखता हूँ, वे लोग कहीं आ ही न रहे हों।''

साही को दूध पीता छोड़कर कौआ बाहर तम्बू पर जा बैठा। वहाँ बैठकर वह आदमियों को नदी पर नहाते हुए देख सकता था।

जब आदमियों ने नहाकर कपड़े पहन लिये तो कौए ने साही को सावधान किया—

''बड़ी तेज़ बहे नदिया, भाई साही।
कपड़े पहने तैयार हुए, भाई साही।''

साही अपने छोटे-से मुँह से दूध पीता जा रहा था। वह केवल इतना ही बोला, ''मैं थोड़ा-सा दूध और पी लूँ।'' और फिर दूध पीने लगा।

कौए ने नदी की तरफ़ देखा। दोनों आदमी तम्बू की तरफ़ चल पड़े थे। कौए की घबराहट बढ़ गयी। साही ख़तरे को समझ नहीं रहा था। लेकिन इस भोले-भाले जीव को बचाना बहुत ज़रूरी था। वह फिर ज़ोर से चीख़ा—

''चल पड़े वे लोग, साही।
तुझे खा जायेंगे वे लोग, साही।''

कौए का ख़याल था, साही इस बार डरकर भाग खड़ा होगा, लेकिन साही उसी तरह शांत भाव से दूध पीता रहा। लम्बा घूँट अन्दर डालकर धीरे-से बोला, ''बस, थोड़ा-सा और पी लूँ।''

कौए ने खीझकर तम्बू पर चोंच मारी। उसने देखा, आदमी तम्बू के पास पहुँचने ही वाले थे। आदमियों ने कौए को देख लिया था। उन्होंने हाथ हिला-हिलाकर कौए को उड़ा दिया। कौए ने उड़ते-उड़ते भी साही को आख़िरी चेतावनी दी।

"जान बचा, भाग जा, साही।
अब मेरे बस, नहीं कुछ रहा, साही"

साही ने सारा दूध पी लिया था। उसने तसल्ली से जँभाई ली और फिर डकार ली। उसने कौए की चेतावनी भी सुनी और आदमियों के क़दमों की आवाज़ भी। वह तेज़ी से बाहर की तरफ़ दौड़ा।

आदमी तम्बू में घुसने लगे तो साही उनके पैरों से टकराया। वे हड़बड़ा गये। एक क्षण तो उन्हें ख़्याल ही नहीं आया कि उन्हें साही को पकड़ना है। अगले ही क्षण वे साही के पीछे दौड़े। वे पहले की तरह साही को ठोकर लगा नहीं सकते थे। ठोकर लगते ही साही सीधा घनी झाड़ियों में जा गिरता और फिर आदमी उसे ढूँढ़ नहीं सकते थे। एक ने जल्दी से सिर से टोप उतारा और भागते हुए साही की तरफ़ निशाना साधा।

कौआ पेड़ पर बैठा देख रहा था। उसे साही पर ग़ुस्सा आ रहा था। साही ने दूध के लालच में ख़ुद को ख़तरे में डाल लिया था। साही अगर एक बार भी टोप के नीचे आ गया तो फिर वह हमेशा के लिए आदमियों की क़ैद में रहेगा। कौए ने जल्दी से टोप की तरफ़ उड़ान भरी और उसे अपने पंजों में पकड़ने की असफल कोशिश की। वह आदमी साही पर टोप फेंकने ही जा रहा था। कौए के अचानक झपट्टे से उसका निशाना चूक गया और टोप साही से कुछ दूर जा गिरा।

कौए की मदद से साही को भागने के लिए समय मिल गया। साही ने छलाँग लगायी और झाड़ियों में घुस गया।

दोनों आदमी बदहवास-से झाड़ियों को घूरने लगे।

साही की जान बचाने की चाव में कौए को अपनी भूख का ध्यान ही न रहा। किसी की जान बचाने में कितनी ख़ुशी मिलती है—कौए ने आकाश की तरफ उड़ान भरते हुए सोचा।

साही की साँसें उखड़ी पड़ी थी। झाड़ियों में बैठे हुए अभी भी उसका दिल धकधक कर रहा था। साही को आज यह बात सच जान पड़ी कि ज़िन्दगी किसी भी भूख से ज्यादा क़ीमती है, इसलिए भूख मिटाने से जान बचाना ज़्यादा ज़रूरी है।

मौत की बेलें

नावों में बैठकर आदमियों का एक दूसरा गिरोह जंगल टापू में पहुँच गया। उन्होंने पहले पहुँचे हुए लोगों की मदद से जंगल में जगह-जगह निशान लगाये, गहरे गड्ढे खोदे और लोहे के सीधे-सीधे तने गाड़ दिये।

इस काम को करने के लिए उन्होंने जंगल टापू के बहुत-से पेड़ काट डाले। पेड़ों के कटने से अनेक घोंसले गिर गये, ढेर सारे अण्डे टूट गये, लेकिन उनको जैसे किसी दूसरे के दुख-सुख से कोई मतलब ही नहीं था।

लोहे के सीधे खड़े तने पर कोई घोंसला नहीं बन सकता था। बहुत-से जानवरों का ख़्याल था कि बरसातों में लोहे के तनों पर कोंपलें फूटेंगी और फैल जायेंगी तथा बरसात के बाद वे उन टहनियों पर घोंसला बनाना शुरू कर देंगे। लेकिन बरसात से पहले ही आदमियों ने एक अनोखी बात कर दी। उन्होंने सीधी क़तार में लगे लोहे के तनों को तारों के साथ जोड़ दिया। तारों के साथ जुड़ी हुई लोहे के तनों की क़तार जंगल टापू के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली गयी थीं। शायद जंगल टापू भी पार कर गयी थीं।

दूसरे परिन्दे और जानवर लोहे की इन ठूँठ बेलों को हैरानी से देखा करते थे। ये जंगल की दूसरी हरी बेलों की तरह नहीं थीं। ये उन्हें ठूँठ और बेजान जान पड़ती थीं।

बन्दरों का इन बेलों से लटकने का बहुत दिल करता था। अगर ये बेलें उनका भार सह लें तो वे दूर तक लटकते हुए जा सकते थे। लोहे की बेलों पर वे रोज़ नया खेल खेल सकते थे।

लोहे की बेलों के ऊपर खुला आसमान था। पक्षियों का मन करता था कि वह साँस लेने के लिए इन बेलों पर बैठें और फिर आसमान की तरफ़ उड़ान भर लिया करें।

लेकिन सभी जानवरों के मन में लोहे की बेलों और तनों के बारे में डर बैठा हुआ था। कौए ने साफ़-साफ़ शब्दों में कह दिया, "मुझे इन लोहे के तनों और बेलों के बारे में कुछ मालूम नहीं। लेकिन किसी को भी इन बेलों को हाथ नहीं लगाना चाहिए। आदमी की बनायी हुई चीज़ों में कहीं-न-कहीं कोई ख़तरा ज़रूर होता है।"

जंगल टापू के इन ख़तरेभरे दिनों में ही एक बन्दरिया ने पुत्र को जन्म दिया। माँ बन्दरिया ने इतना सुन्दर बच्चा अभी तक नहीं देखा था। बन्दरिया के बेटे का चेहरा लाल सुर्ख़ था। शरारत से भरी आँखें और सुनहरे बाल।

बन्दरिया सारा दिन अपने बेटे को सीने से चिपटाये, दूध पिलाती रहती थी। ममतावश उसके

सुनहरे बालों में जुएँ ढूँढ़ने लगती थी। उसका अपने बेटे को अपने सीने से उतारने का दिल ही नहीं करता था। वह अपने बेटे को ज़मीन पर बिठाने के बारे में सोचती भी थी तो उसे घबराहट होने लगती थी। कुछ आदमी अभी भी जंगल टापू में हुड़दंग मचाते घूम रहे थे। वे सभी जीवों के लिए ख़तरा थे।

बन्दरिया का बेटा धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था। माँ उसे खाने-पीने की चीज़ों की पहचान कराने लगी थी। उसे पेड़ों से लटकती फलियों से बीज निकालकर खिलाती। छोटी-छोटी छलाँगे भरने का तरीक़ा सिखाती। लेकिन अभी तो उसे सिखाने के लिए बहुत कुछ बाक़ी था। जब तक आदमी जंगल टापू में थे, उसे इन बातों से आगे सिखाना ख़तरनाक हो सकता था। बन्दरिया बड़े धीरज से आदमियों के जंगल टापू से जाने का इंतज़ार करने लगी।

आख़िर वह शुभ दिन भी आ ही गया। आदमी अपना काम ख़त्म करके वापस लौट गये। जंगल टापू के सभी जानवरों ने राहत की साँस ली। उस दिन उन्होंने जंगल में खूब धमाचौकड़ी की और जी भरकर खेला।

शायद बादल भी जीव-जंतुओं की ख़ुशी में शामिल हो गये। उस दिन वे ख़ूब गरजे और एक-दूसरे के पीछे दौड़ते रहे। रात को बरसात शुरू हो गयी।

उस बार की बरसात ज्यादा लम्बी नहीं थी। लेकिन जंगल टापू के लिए इतनी बारिश ही बहुत थी। इस बारिश ने आदमियों द्वारा फैलायी हुई गंदगी को साफ़ कर दिया था। जंगल टापू फिर पहले की तरह ही सुन्दर हो गया था। चारों तरफ़ हरियाली का साम्राज्य था। नित्य रंग-बिरंगे सुगन्धित फूल अपनी छटा बिखेर रहे थे। बरसात होने के बावजूद लोहे के तनों पर कोंपलें नहीं फूटी थीं। लेकिन कुछ जंगली बेलें लोहे के तनों के भद्देपन को छिपाने की कोशिश में थी। वे लोहे के तनों से लिपट गयी थीं।

बरसात के बाद जब सूरज के दर्शन हुए तो बन्दरिया ने पहली बार निडर होकर अपने बेटे को सीने से उतारा। उसने उसे सबसे पहले अकेले रहने का तरीक़ा बताया। उसे सामने बैठाकर वह बोली, ''देखो, तुम्हारे बन्दर साथी तो हर समय तुम्हारे साथ रहेंगे नहीं। वैसे भी, हर बन्दर को ख़तरों से अकेले निपटने का तरीक़ा अवश्य आना चाहिए। जंगल में जो अपनी सहायता ख़ुद नहीं कर सकता, वह अधिक दिन तक ज़िन्दा नहीं रह सकता।''

फिर बन्दरिया उसे अपने बचाव के दाँवपेंच समझाने लगी। छलाँग लगाना इस दाँवपेंच का महत्त्वपूर्ण हिस्सा था। धीरे-धीरे बन्दरिया का बेटा लम्बी-लम्बी छलाँग लगाना भी सीख गया।

एक दिन माँ-बेटा लम्बी-लम्बी छलाँगें लगाते हुए उन तारों तक पहुँच गये। बन्दरिया का बेटा रुका और तारों की तरफ़ देखने लगा। माँ ने उसके मन की बात ताड़ ली। वह जल्दी से बोली, ''हम केवल पेड़ों पर ही छलाँगें लगायेंगे।''

लेकिन बेटे ने तो तारों से लटकने की ज़िद पकड़ ली।

बन्दरिया को लोहे की बेलों और ठूँठ-जैसे तने के ख़तरे के बारे में कुछ मालूम नहीं था। उसे तो कौए की बात पर विश्वास था। उसने अपने बेटे को समझाया, "देख बेटा, बड़ों की बातें मान लेनी चाहिए। अपने अनुभव से ही वे कोई बात कहते हैं। बड़ों की बात मानने में ही अपना भला होता है।"

लेकिन बेटा बहुत नटखट था। उसने माँ के टोकते-टोकते भी छलाँग लगायी और तार को पकड़ लिया। हाथ लगाते ही उसकी चीख़ निकल गयी।

तार में छिपी बिजली ने बन्दरिया के बेटे को जकड़ लिया। बेटे को बचाने के लिए अपनी जान की परवाह न करते हुए, अगले ही पल बन्दरिया ने पूरी ताक़त से छलाँग लगायी और तार को पकड़ने के स्थान पर अपने बेटे को ज़ोर से धक्का मारा। इस धक्के से बेटे का हाथ तार से छूटा और वह माँ के साथ ही नीचे ज़मीन पर आ गिरा।

ज़मीन पर गिरते ही दोनों बेहोश हो गये।

दोनों बहुत देर तक बेहोश पड़े रहे। धीरे-धीरे माँ को होश आया। जिस भयानक शक्ति ने बेटे को तार से जकड़ लिया था, उसी का झटका माँ को भी लगा था। अब इसमें कोई शक नहीं था कि लोहे के तनों में बँधे तारों में बन्दरों के लिए मौत छुपी हुई थी। बेटा अभी भी बेहोश पड़ा था। बन्दरिया घबरा गयी और उसके चारों ओर चक्कर काटने लगी।

कुछ देर बाद बेटे को होश आ गया। चिन्ता में डूबी माँ की साँस में साँस आयी।

बन्दरिया का बेटा माँ की गोद में गिर पड़ा और कातर स्वर में बोला, ''माँ, मुझे अपनी ग़लती का अहसास हो गया है। मैं आगे से हमेशा तुम्हारा कहना माना करूँगा।''

माँ ममतामयी नज़रों से बेटे को देखती रही और फिर उसे सीने से चिपटा लिया।

रब्ब का बेटा

एक दिन एक भारी-भरकम चिड़िया जंगल टापू के ऊपर से उड़ती हुई निकल गयी। उसकी भयानक आवाज़ से सारा जंगल टापू दहल उठा। भयभीत जानवर भागकर झाड़ियों में जा छिपे। सहमे हुए पक्षियों ने बहुत देर तक आँखें बन्द रखीं।

पूरे दिन जंगल टापू के जानवर सहमे-सहमे रहे। फिर धीरे-धीरे उस दैत्य चिड़िया के बारे में भूल गये। कुछ दिनों बाद उसी दैत्य चिड़िया की चिंघाड़ सुनाई दी। जीव-जंतु फिर झाड़ियों में दुबक गये, लेकिन इस बार उन्होंने इसे ध्यान से देखा तो उनकी आँखें हैरानी से फैल गयी। उन्होंने अभी तक इतना बड़ा जानवर नहीं देखा था। दैत्य चिड़िया उड़ने के लिए पंख तक फड़फड़ा नहीं रही थी बल्कि पंख फैलाये लगातार उड़ती चली जा रही थी। फिर वह उड़ती हुई बादलों में खो गयी।

धीरे-धीरे दैत्य चिड़िया का आसमान के ऊपर से निकलना

एक साधारण बात हो गयी। दैत्य चिड़िया सप्ताह में दो बार जंगल टापू के ऊपर से उड़ती हुई निकलती थी। वह एक बार पूरब से आती थो और एक बार पश्चिम से। अब जीव-जंतु दैत्य चिड़िया से डरते नहीं थे, बल्कि आवाज़ सुनते ही खड़े हो जाते और उसे देखने लग जाते थे।

एक दिन दैत्य-चिड़िया जंगल टापू के ऊपर से गुज़र रही थी। अचानक उसकी पूँछ से धुआँ निकलने लगा। अगले ही पल वह धुआँ आग की लपटों में बदल गया। दैत्य चिड़िया डोलने लगी। उसकी आवाज़ पहले से भी भयानक हो गयी।

एकाएक दैत्य-चिड़िया का पेट फट गया और उसके अन्दर से सफ़ेद-सी कोई चीज़ बाहर गिर पड़ी। दैत्य चिड़िया की चोंच सीधी पहाड़ों की तरफ़ थी। अगले पल ज़ोर का धमाका हुआ। चिड़िया टुकड़ों में बँट गयी और नदी पारकर सीधी पहाड़ों से जा टकरायी। एक और ज़ोरदार धमाका हुआ। जंगल के जीव-जंतुओं ने आग की ऊँची-ऊँची लपटें उठती देखीं।

जीव-जंतु कुछ समय तक अचम्भे में पड़ गये। वे शाम तक घटना का धुँधला-सा ख़्याल लेकर अपने बसेरों की ओर लौट गये।

बूढ़ा ख़रगोश चलता हुआ अचानक रुक गया। उसे कोई आवाज़ सुनायी पड़ी। उसने ध्यान से सुना। तभी किसी के रोने की आवाज़ आयी। वह उसी तरफ़ दौड़ पड़ा।

कुछ दूरी तक जाकर वह रुक गया।

सामने कपड़े में लिपटा एक बच्चा पड़ा था। रोने की आवाज़ किसी बच्चे की ही थी। पेड़ के ऊपर एक फटी हुई छतरी अटकी हुई थी। छतरी की लम्बी डोरियाँ बच्चे के साथ बँधी हुई थीं।

बूढ़े ख़रगोश को समझते देर न लगी कि दिन में दैत्य चिड़िया में से जो चीज़ बाहर गिरी थी, वह यही थी। वह एक बार झिझका और फिर बच्चे के पास आ गया। यह अवश्य ही किसी दैत्य-चिड़िया का बच्चा होगा। लेकिन वह दैत्य-चिड़िया की तरह भयानक नहीं लग रहा था।

बच्चा रो रहा था। वह भूखा था। रोने से यह पता लग रहा था कि बहुत भूखा है।

बूढ़े ख़रगोश ने बच्चे के आसपास बँधी रस्सियों को काटने की कोशिश की, लेकिन उसके छोटे-छोटे दाँतों से वे कट नहीं रहीं थीं।

कुछ दूर कीकर के पेड़ पर गिलहरी भुट्टे कुतर रही थी। बूढ़ा ख़रगोश उसे बुला लाया। उसने कुछ ही क्षणों में रस्सियाँ काट दीं।

बूढ़े ख़रगोश ने बच्चे के आसपास लिपटे कपड़े की गाँठ को मुँह से उठाकर चलने की कोशिश की। बच्चा उसके अनुमान से भारी था, लेकिन बूढ़ा ख़रगोश भला कहाँ हार माननेवाला था ! वह गाँठ को मुँह मे लेकर धीरे-धीरे उसे घसीटने लगा। वह उसे चोट और ठोकरों से बचाता हुआ अपनी खोह तक ले गया।

बच्चा अभी भी रोये चला जा रहा था। बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर कुछ दूसरे ख़रगोश भी इकट्ठे हो गए। उन्होंने बड़ी ललक से दैत्य-चिड़िया के बच्चे को देखा। एक ख़रगोश ने नरम-नरम

घास बच्चे के मुँह पर रखी। बच्चे ने नन्हें-नन्हें होंठों से घास को चूसा और फिर रोने लगा।

"यह शायद घास नहीं खाता।"

"मालूम नहीं, यह क्या खाकर चुप होगा ?"

"मालूम नहीं।"

कुछ दूरी पर माँ-बन्दरिया एक पेड़ की डाल पर बैठी अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। उसने भी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी। वह बच्चे को सीने से लगाए वहाँ पहुँच गयी। बच्चे को देखकर उसने सिर खुजलाया, "यह तो कुछ-कुछ मेरे बेटे-जैसा ही है।"

"शायद यह बन्दर ही हो," एक ख़रगोश बोला।

"नहीं, यह कोई दूसरा जानवर है।" बन्दरिया ने बच्चे को ध्यान से देखकर कहा और फिर उसके माथे पर हाथ फेरने लगी, "यह तो भूख से बिलख रहा है। मैं इसे दूध पिलाकर देखती हूँ, शायद पी ले ... ।"

बन्दरिया ने सीने के एक तरफ़ अपने बेटे को लगा लिया और दूसरी तरफ़ बच्चे को और दोनों को दूध पिलाने लगी। दूध का पहला घूँट पीते ही बच्चा चुप हो गया। फिर दूध पीता-पीता सो गया।

बन्दरिया कुछ देर तक सोये हुए बच्चे की तरफ़ देखती रही फिर बोली, "इसे मैं अपने साथ ही ले जाती हूँ। दोनों इकट्ठे ही पल जायेंगे।"

"इसे तो अब तुम ही पालोगी"—बूढ़े ख़रगोश ने कहा, "लेकिन अभी इसे तुम अपने साथ लेकर मत जाओ। इसे तुम्हारे बेटे की तरह चिपटना नहीं आता। अगर यह सोये-सोये गिर पड़ा तो इसे चोट लग सकती है।"

बन्दरिया को यह बात समझ में आ गयी। वह बच्चे को वहीं छोड़कर चली गयी। उसके जाने के बाद ख़रगोशों ने बच्चे को खोह में घसीटने का प्रयत्न किया, लेकिन खोह बच्चे के लिए छोटी पड़ी। बच्चे कों रखने के लिए बड़ी खोह चाहिए थी। बूढ़े ख़रगोश को एक पेड़ के तने का ख़्याल आया। गिर चुके पेड़ का तना अन्दर से खोखला हो चुका था। कुछ ख़रगोशों ने मिलकर खोल को साफ़ किया। उसके अन्दर सूखी घास बिछायी। फिर बच्चे को खोल के अन्दर सुलाकर सभी अपनी-अपनी खोह में चले गये। लेकिन बूढ़ा ख़रगोश सारी रात बच्चे के पास बैठा झपकियाँ लेता रहा।

आसमान से गिरे बच्चे की ख़बर सुबह होने के साथ ही पक्षियों तक भी पहुँच गयी। सभी दैत्य चिड़िया के बच्चे को देखने आ गये।

उस समय कौआ बाहरी जंगल की तरफ़ उड़ रहा था। नीचे भीड़ देखकर वह भी रुक गया। जानवरों की तरह-तरह की बातें सुनकर वह ऊँची आवाज़ में बोला, "अरे बेवकूफ़ो, वह दैत्य चिड़िया नहीं, आदमी की उड़नेवाली मशीन थी।

"अरे बात क्या है ?" बूढ़े ख़रगोश ने आगे बढ़कर पूछा।

"तुम लोगों के दिमाग़ को क्या हो गया है !" कौए ने खीझकर कहा, "क्या तुम आदमी के

बच्चे को भी नहीं पहचानते। ... फिर इसे सँभालकर क्यों बैठे हो। क्या तुम भूल गए कि आदमियों ने अपनी आगवाली नलियों से कितने जानवर और पक्षी मारे थे ? उन्होंने हमारे जंगल को कितना गंदा बना दिया था। इसके कई सुन्दर-सुन्दर पेड़ों को काट डाला। घोंसलों के टूटने से बेहिसाब अण्डे फूट गये थे। आदमी से बढ़कर और कोई दूसरा ख़तरनाक जानवर नहीं है। आदमी के बच्चे को अभी नदी में फेंक देना चाहिए।''

चारों तरफ़ ख़ामोशी छा गयी।

तभी बन्दरिया छलाँग लगाकर बच्चे के पास आ गयी और उसके बालों में हाथ फेरते हुए बोली, ''यह तो बच्चा है।''

''लेकिन है तो आदमी का !''

बूढ़े ख़रगोश ने कौए को टोक दिया, ''बच्चा चाहे किसी भी जानवर का हो—वह भगवान का रूप होता है।''

''लेकिन ... लेकिन ... ।''

''इस बच्चे को हम अपने साथ रखेंगे। यह बन्दरिया के दूध पर पलेगा। जंगली जीवों के बीच खेलकर बड़ा होगा। यह अच्छी बातें सीखेगा, अच्छा बनेगा। लेकिन कौए, तुम तो समझदार होकर भी ... ।''

कौए ने आँखें नीची कर लीं और धीरे-से बोला, ''बाबा, मैं इसे आदमी के रूप में ही देख रहा था। मुझे ख़्याल ही नहीं आया कि यह आदमी नहीं, रब्ब है। ... छोटा-सा रब्ब।''

''चलो हम मिलकर इसका कोई नाम रखें।'' बूढ़े ख़रगोश ने कौए की झेंप मिटाने के लिए बात बदली और उत्साह से बोला, ''कोई रब्ब-जैसा नाम, सुन्दर-सा।''

बाक़ी जानवर भी बूढ़े ख़रगोश के उत्साह में शामिल हो गए, ''हाँ, कोई सुन्दर-सा नाम।''

सभी सोचने लगे।

बहुत देर तक अटकलें लगती रहीं लेकिन कोई सुन्दर-सा नाम मिल नहीं रहा था।

कौए ने टहनी पर अपनी चोंच रगड़ी और फिर गरदन मोड़कर अपने पंखों को खुजलाते हुए कहा—''बाबा, यह रब्ब का रूप है न !''

''हाँ।''

''वैसे भी यह ऊपर से ही गिरा है।''

''हाँ, यह ऊपर से ही गिरा है।''

कौआ फिर सोचने लगा। उसने अपनी पूँछ बार-बार ऊपर-नीचे की और ऊँचा-ऊँचा शोर मचाने लगा, ''मिल गया ... मिल गया !''

''हमें भी बताओ।'' दूसरे जीव उतावले हो उठे।

''इसका नाम हम रब्बू रखेंगे ... रब्बू।''

"रब्बू! ... रब्बू! ... रब्बू!"

सभी जीव नाचने लगे। ऊँचे स्वर में गाने लगे।

कौए ने जाने के लिए पंख खोले और फिर रुक गया, "बाबा, मैं जा रहा हूँ, लेकिन जाने से पहले, एक बात ... ।"

बूढ़ा ख़रगोश आगे आ गया। कौआ टहनी से उड़कर उसके पास आ बैठा, "केवल एक बात, रब्बू को ध्यान से पालना। अगर बुरे आदमियों के हाथ लग गया तो तबाह हो जायेगा। वह कई बार बच्चों के हाथों में भी मौत को उगलनेवाले डण्डे पकड़ा देते हैं। आपने तो आदमियों को देखा ही हुआ है।"

यह कहकर कौए ने नीले आसमान की ओर उड़ान भरी।

बूढ़े ख़रगोश ने एक बार उड़ते कौए को देखा और फिर रब्बू के सिर पर हाथ फेरने लगा।

अलविदा, जंगल टापू

रब्बू धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था।

वह बन्दरों के साथ कभी पकड़म-पकड़ाई खेलता तो कभी पेड़ों की टहनियों से लटकता रहता। एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक लम्बी-लम्बी छलाँगें लगाता रहता। बन्दरिया जानती थी कि रब्बू बन्दरों से अलग था और उसे पेड़ से गिरकर चोट भी लग सकती थी। वह रब्बू को ऐसा करने से मना करती थी। उस पर खीझती थी, दाँत किटकिटाती थी।

रब्बू जब माँ बन्दरिया को गुस्से में देखता तो टहनियों से लटकता, छलाँगें लगाता। कभी उस तक पहुँच जाता था और कभी उसे बाँहों में लेकर भींच लेता। रब्बू के प्यार से माँ बन्दरिया का सारा गुस्सा ग़ायब हो जाता था और वह उसे लाड़ करने लगती थी।

ख़रगोशों के साथ आँखमिचौनी खेलते समय रब्बू, ख़रगोशों की तरह ही झाड़ियों में छुप जाता। कई बार तो वह ख़रगोशों को मिल ही नहीं पाता था। थक-हारकर रब्बू अपने आप झाड़ियों में से बाहर निकल आता और फिर ख़रगोशों को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते दूर निकल जाता। रास्ते में वह पक्षियों को गाते सुनता तो वहीं रुक जाता। कभी ख़ुद भी पक्षियों के साथ सुर मिलाकर गीत गाने लगता था।

रब्बू के दिन इसी तरह हँसते-खेलते गुज़र रहे थे। लेकिन कभी-कभी रब्बू उदास हो जाता था। वह ज़ंगल के सभी जानवरों से अलग था। उसका मन करता था कि जंगल टापू में उस-जैसे कुछ दूसरे जानवर भी होते। वह भी सब मिलकर रहते, जैसे ख़रगोश रहते हैं या बन्दर रहते हैं।

एक दिन वह सुबह-सवेरे बाहर निकल गया और सारा दिन जंगल में घूमता रहा। उसने जंगल टापू के सारे कोने छान डाले, लेकिन जंगल टापू में कहीं भी उसे अपने-जैसा कोई जानवर नहीं मिला।

शाम को थका-हारा वह वापस लौट आया और खोखले तने का सहारा लेकर बैठ गया।

बूढ़े ख़रगोश ने पूछा, "रब्बू, रब्बू, तू आज चुप क्यों है?"

"बाबा, क्या जंगल टापू में मेरे-जैसा कोई दूसरा जानवर नहीं है ?"

"नहीं बेटा, यहाँ तेरे-जैसा कोई भी नहीं है।"

"वे कहाँ मिलेंगे।"

"मैंने कौओं से सुना है कि तुम्हारे-जैसे जीव तो बाहरवाले जंगल में होते हैं।"

"बाहरवाला जंगल कहाँ है।"

"पानी पारकर आगे की तरफ़ बाहरवाला जंगल है। पहले जंगल टापू और बाहरवाला जंगल एक ही होता था। एक बार पहाड़ों से इतना पानी आया कि चारों तरफ़ पानी-ही-पानी हो गया। नदी दो हिस्सों में बहने लगी। पानी उतरा तो जंगल का यह हिस्सा टापू बन गया। तभी से जंगल टापू के चारों तरफ़ पानी है। तब जो यहाँ रह गया, यहीं बस गया। जो बाहरवाले जंगल में थे, वे वहीं बस गये। तुम्हारी नस्ल के जीव बाहरवाले जंगल में हैं।"

"मुझे उनके पास एक बार जाना है बाबा !"

बूढ़ा ख़रगोश उदास हो गया, "क्या हम तुम्हें प्यार नहीं करते।"

"यह बात नहीं है बाबा ! मेरा दिल तो तुम्हारे साथ रहने को ही करता है, लेकिन मेरा दिल यह भी चाहता है कि वे भी साथ हों, जो मेरे-जैसे हैं।"

बूढ़ा ख़रगोश कुछ देर सोचता रहा और फिर भरे गले से बोला, "रब्बू, तुमने जाने की बात उस समय कही है, जब तू हमारा अपना हो गया है। मुझे तो याद भी नहीं रहा था कि तू किसी आदमी की औलाद है।"

बूढ़े ख़रगोश ने मुँह को दूसरी तरफ़ कर अपने आँसू छुपा लिये। अपने को सँभालकर वह धीरे-से बोला, "रब्बू, तू जा। तुझे तो आख़िरकार जाना ही था। अपना ख़्याल रखना। आदमी कोई अच्छे जीव नहीं होते, यह कौए ने बताया है। कौए झूठ नहीं बोलते। एक बात याद रखना, तुम केवल उसी के पास रुकना जो सचमुच अच्छा हो, जो तुम्हें हमारी तरह ही रखे, हमारी तरह ही प्यार करे।"

रब्बू के जाने की ख़बर जंगल टापू में फैल गयी। कई जानवरों ने उसे रोकने की कोशिश भी की, लेकिन रब्बू अपने फ़ैसले पर डटा रहा।

रब्बू को अपने आदमियों के पास जाना था, लेकिन उसे आदमियों के बारे में कुछ मालूम नहीं था। उसे तो उनकी भाषा भी नहीं आती थी। कम-से-कम उनकी भाषा तो आनी चाहिए थी।

जंगल टापू में सिर्फ़ तोतों को ही आदमियों की भाषा आती थी। बूढ़े ख़रगोश ने राय तोते से इस बारे में बात की तो वह ख़ुशी-ख़ुशी मान गया।

तोते ने रब्बू को सिखाना शुरू कर दिया।

तोते ने आसमान की तरफ़ देखकर पुकारा, "अम्बर !"

"अम्बर !" रब्बू ने दोहराया।

तोते ने उड़कर रब्बू को चोंच मारी, "रब्बू !"

"रब्बू।"

"माँ-बन्दरिया !" तोते ने माँ-बन्दरिया के पास जाकर कहा।

"माँ-बन्दरिया !" रब्बू ने पीछे-पीछे दोहराया।

तोता उड़ा और जाकर बूढ़े ख़रगोश के ऊपर बैठ गया, "बाबा ख़रगोश।"

"बाबा ख़रगोश ! ... बाबा ख़रगोश !" रब्बू ने तालियाँ बजायी और ज़ोर-ज़ोर से हँसने

लगा। पहले ही दिन उसने उस भाषा के बहुत-से शब्द सीख लिए थे, जो आदमी बोलते हैं।

कुछ ही दिनों में रब्बू ने काफ़ी कुछ सीख लिया। अब वह आदमियों की भाषा में ज़रूरी बातें कर सकता था।

गिरे पड़े पेड़ की खोखल ने रब्बू को कई बार आसरा दिया था। उसी खोखल में उसने बारिश और तूफ़ानों को सहन किया था। उसी में रहकर वह बड़ा हुआ था। अब जंगल टापू से विदा होते समय लक़ड़ी की उसी खोखल से उसे नदी के पार जाना था।

जानवरों और पक्षियों ने जंगल से तरह-तरह के फल लाकर लकड़ी की खोखल को ऊपर तक भर दिया। अब रब्बू को रास्ते में भूखा रहने का कोई डर नहीं था और उसके पीने के लिए नदी का साफ़ पानी था।

रब्बू को भेजते समय नदी के क़िनारे जानवरों की भीड़ लग गयी थी। पेड़ों की टहनियाँ पक्षियों के भार से ज़मीन की ओर झुक गयीं।

लकड़ी की खोखल में फल-ही-फल थे। रब्बू के बैठने के लिए जगह ही नहीं थी। माँ बन्दरिया ने उसे केलों के बन्ध पर बैठा दिया और बोली, "तुम्हारा रास्ता पता नहीं कितना लम्बा हो। खाने की कोई भी चीज़ बाहर फेंकने की मत सोचना। तुम ज्यों-ज्यों फल खाते जाओगे, तुम्हारे लिए जगह बनती जायेगी।"
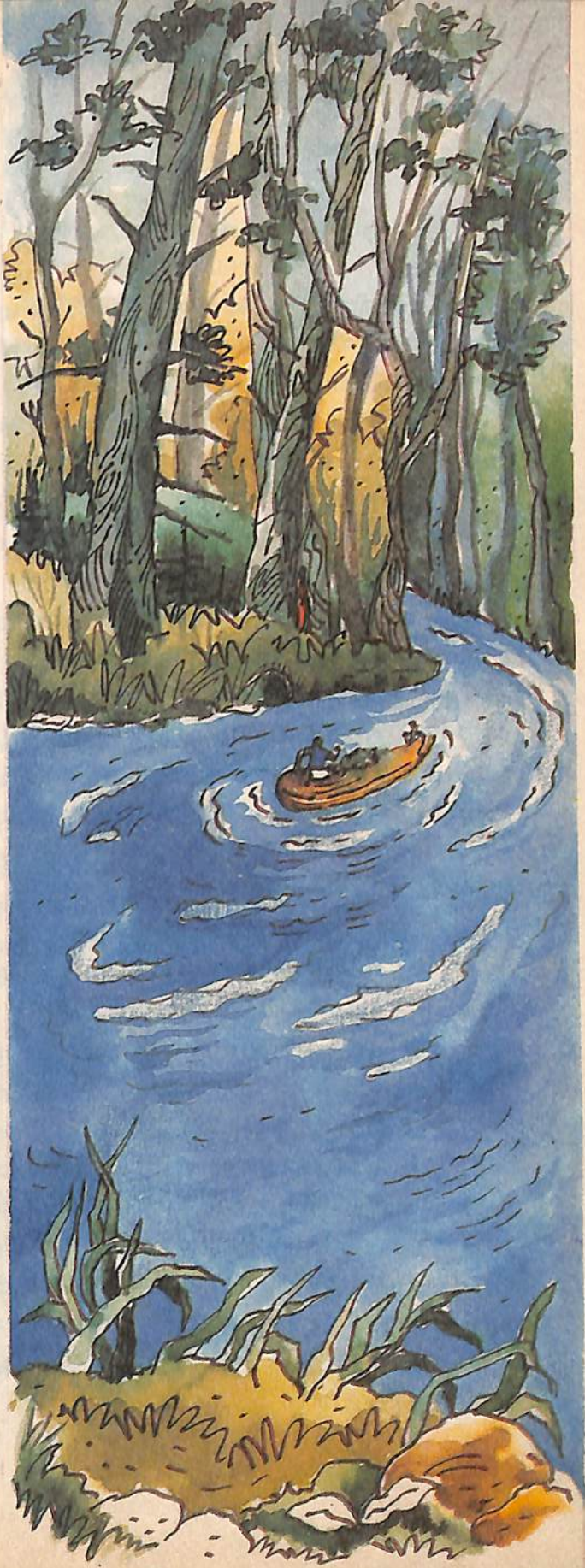
बूढ़े ख़रगोश ने रब्बू को फिर याद कराया, ''देखना, केवल उसी के पास रुकना, जो सबसे अच्छा हो।''

पक्षी बोले, ''हम रब्बू के साथ जायेंगे। हमें बाहरवाले जंगलवालों की पहचान है।''

''तुम तभी वापस आना, जब रब्बू वहाँ पहुँच जाये, जहाँ उसे रुकना चाहिए।'' बूढ़े ख़रगोश ने पक्षियों को ज़ोर देकर कहा।

जानवरों ने सूखी लकड़ी के तने को पानी में धकेला और भरे मन से रब्बू को विदा किया। पक्षी उड़े और सूखे तने की टहनियों पर बैठ गये।

रब्बू का मन भी भरा हुआ था। जंगल टापू ही उसका घर था। टापू के जीव ही उसका परिवार थे। जंगल टापू के अलावा उसे और किसी भी दुनिया की जानकारी नहीं थी। वह अपने परिवार को छोड़कर एक अनजाने संसार की तरफ़ चल पड़ा था। वह मुड़-मुड़कर जानवरों की उदास भीड़ को तब तक देखता रहा, जब तक जंगल टापू उसकी नज़रों से ओझल नहीं हो गया।

नदी की दूसरी धारा अपने बिछड़े पानी की धार से आ मिली थी। नदी का पाट बहुत चौड़ा हो गया था। रब्बू की नाव धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। खाने का सामान धीरे-धीरे कम हो रहा था। पहले तो खोखल में रब्बू के बैठने के लिए जगह बनी और फिर उसके लेटने के लिए जगह बन गयी। चलते-चलते कई दिन और कई रातें बीत गयीं। लेकिन अभी भी रब्बू को कोई आदमी नहीं दिखा था।

पक्षी कभी-कभी उड़कर जंगल में जाते और फिर लौटकर आ जाते थे। रब्बू निराश हो गया था। शायद बाहरवाले जंगल में भी आदमी नहीं थे।

एक सुबह पक्षियों ने एक आदमी देखा। वह वहाँ खड़ा था, जहाँ कुछ पेड़ नदी के पानी पर झुके हुए थे। रब्बू अभी सोया हुआ था। उन्होंने रब्बू को हिलाकर जगाया। होश सँभालने के बाद वह पहला आदमी था, जिसे रब्बू ने देखा था। वह ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाने लगा। उसकी इच्छा हुई कि वह पानी में छलाँग लगा दे और जल्दी से तैरकर उसके पास पहुँच जाये।

पक्षियों ने उसे रोका, ''रब्बू, आदमियों से मिलने के लिए इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिए।''

किनारे पर खड़ा आदमी शिकारी थी। उसके कन्धे पर चिड़ियों को फँसानेवाला जाल था और हाथ में पिंजरे। वह बड़ी हैरानी से इस अजीब दृश्य को देख रहा था। पक्षी बच्चे से डर नहीं रहे थे, बल्कि कई बार उड़कर उसके ऊपर बैठ जाते थे। शिकारी ने सोचा, ''अगर यह लड़का उसके पास रहने को मान जाये तो वह बहुत अमीर हो सकता है। वह सुन्दर-से-सुन्दर पक्षी फँसा सकता है। फिर उन्हें बाज़ार में बेचकर अच्छी क़ीमत बटोर सकता है।''

जवाब में शिकारी ने भी हाथ हिलाया और ऊँची आवाज़ में पूछा, ''ऐ लड़के ! कौन है तू ! कहाँ से आया है तू !''

रब्बू ने ऊँची आवाज में बताया :

"मैं आसमान से गिरा रब्बू, बन्दरिया मेरी माता।
मैं आसमान से गिरा रब्बू, ख़रगोश मेरा पिता।"

शिकारी उलझन में पड़ा माथा खुजलाने लगा और फिर बोला, "रब्बू, रब्बू। तू मेरे पास रुक जा। मैं तुझे बढ़िया-बढ़िया ज़ायक़ेदार चीज़ें खाने को दिया करूँगा।"

रब्बू ने चिड़ियों की तरफ़ देखा। पक्षी चुपचाप शिकारी के मन की बात पढ़ रहे थे। वे बोल पड़े—

"रब्बू वहीं रुकना, जो सबसे अच्छा।
रब्बू वहीं रुकना, जो सबसे मीठा।"

शिकारी को पक्षियों पर गुस्सा आ गया। वह खीझकर बोला, "तू इनको चुप करा। ये हम दोनों के बीच में बोलनेवाले कौन होते हैं।"

रब्बू ने साथ बैठे तोते को प्यार किया और लाड़ से उसे अपने सिर पर बैठा लिया। वह शिकारी की तरफ़ देखकर हँसा और बोला—

"ये सारे पक्षी लाड़ले, मेरे अपने बहन-भाई।
गलेगी यहाँ दाल नहीं, तुम अब जाओ और कहीं।"

सूखे तने की खोखल तैरते-तैरते आगे निकल गयी।

रास्ते में उन्होंने एक धोबी देखा। वह नदी के किनारे कपड़े धो रहा था। उसने नदी के बीच बहते हुए तने को देखा। सूखी टहनियों पर बैठी चिड़ियों से होती हुई उसकी नज़र लड़के पर जा पड़ी। उसकी आँखों में चमक आ गयी। कुछ दिन पहले ही धोबी का गधा मरा था। अगर यह लड़का उसके पास रहने के लिए मान जाये तो उसकी मुश्किल आसान हो सकती थी। घाट से कपड़े उठाकर लाने का काम यह लड़का कर सकता है। यह उसके साथ कपड़े भी धुलवा सकता है।

उसने ऊँची आवाज़ में पूछा, "ऐ लड़के, कौन है तू! कहाँ से आया है तू!"

रब्बू ने जबाव दिया :

"मैं आसमान से गिरा रब्बू, बन्दरिया मेरी माता।
मैं आसमान से गिरा रब्बू, ख़रगोश मेरा पिता।"

रब्बू का जवाब सुनकर धोबी कुछ हैरान-सा हुआ और फिर बोला, "रब्बू, रब्बू। तू मेरे पास रह जा। मैं तुझे पहनने के लिए सुन्दर कपड़े दिया करूँगा।"

पक्षी धोबी की खोटी नीयत पहचान गये। वे बोले :

"रब्बू वहाँ रुकना, जो सबसे अच्छा
रब्बू वहाँ रुकना, जो सबसे मीठा।"

धोबी को पक्षियों पर गुस्सा आ गया। वह ऊँची आवाज़ में चीख़ पड़ा, "इन्हें चुप कराओ। ये भला कौन होते हैं बीच में बोलनेवाले ?"

रब्बू ने जवाब दिया :

"ये सारे पक्षी लाड़ले, मेरे प्यारे बहन-भाई।
गलेगी यहाँ दाल नहीं, तुम अब जाओ और कहीं।

नाव लगातार तैरती रही।

वे शायद आदमियोंवाले जंगल के पास से निकल रहे थे। उन्हें रास्ते में कई आदमी मिले। वे सभी अपने-अपने मतलब के लिए रब्बू को अपने पास रखना चाहते थे। उन्होंने रब्बू को कई तरह के लालच दिये लेकिन चिड़ियों का जवाब इनमें से हर-एक को चुप करा देता था।

नदी के किनारे एक बुढ़िया अम्मा झुककर पानी का घड़ा भर रही थी। अचानक उसका पैर फिसला। सँभलने की कोशिश में उसका घड़ा हाथ से छूटकर बह गया। घड़ा बहता-बहता नाव के पास आया तो रब्बू ने हाथ बढ़ाकर घड़े को पकड़ लिया।

"हमें किनारे पर जाकर यह घड़ा बुढ़िया अम्मा को दे आना चाहिए।" चिड़ियों ने सलाह दी।

चिड़ियों ने अभी यह कहा ही था कि रब्बू ने नाव किनारे की तरफ़ मोड़ दी। अपनी ही तरह के किसी प्राणी को नजदीक से देखने की उसकी बहुत तमन्ना थी।

बुढ़िया अम्मा किनारे पर उदास बैठी थी। नाव किनारे लगी तो रब्बू ने उतरकर उसे घड़ा पकड़ा दिया। बुढ़िया अम्मा ख़ुश हो गयीं। उसने रब्बू को आशीषें दी, "जीता रह बेटा। जवानी बनी रहे। मैंने पहले तो तुम्हें कभी देखा नहीं। कौन है तू।"

"मैं आसमान से गिरा रब्बू, बन्दरिया मेरी माता।
मैं आसमान से गिरा रब्बू, ख़रगोश मेरा पिता।"

बुढ़िया अम्मा अभी रब्बू के जवाब के बारे में सोच ही रही थी कि सूखे तने की टहनियों से उड़कर बहुत-से पक्षी रब्बू के कंधे पर आ बैठे। रब्बू ने लाड़ से दो को कन्धे से उतारकर हाथ में पकड़ लिया। बुढ़िया अम्मा हैरान हुई और बोली, "रब्बू। ये रंग-बिरंगे पक्षी। क्या ये सारे ... ?"

रब्बू हाथवाले पक्षियों को आसमान की तरफ़ उड़ाकर हँसा :

"ये सारे पक्षी लाड़ले, मेरे प्यारे बहन-भाई।
मेरी साँसों के संग हैं जीते, इनसे है मेरी दोस्ती।"

"मेरा भी एक बेटा था, तुम्हारे-जैसा।" बुढ़िया अम्मा ने लम्बी साँस ली, "वह भी पक्षी और जानवरों को बहुत प्यार करता था। ख़रगोश, कुत्ता, बन्दर और तोता, सभी उसका अभी भी इन्तज़ार करते हैं।"

"अब वह कहाँ है?"

"एक बार घर से गया तो फिर लौटकर नहीं आया। लोग कहते हैं, वह नदी में डूब गया होगा। लेकिन मुझे लगता है कि वह कहीं जंगली जानवरों से खेलता हुआ, घर आना भूल गया होगा। अब तक तो वह घर का रास्ता भी भूल गया होगा।"

"क्या बहुत साल हो गये हैं!"

"हाँ, बहुत साल हो गये हैं। अभी भी याद आ जाता है"—यह बात कहते-कहते बुढ़िया अम्मा गहरी सोच में डूब गयी। कुछ देर तक वह वैसे ही गुमसुम बैठी रही; फिर उसने अचानक रब्बू का हाथ पकड़ लिया। मिन्नत करते हुए बोली, "रब्बू, रब्बू! तू मेरे पास रह जा।"

पक्षी चुपचाप बुढ़िया अम्मा का मन पढ़ रहे थे। रब्बू के बोलने के पहले ही वे बोल पड़े, "खाने को क्या दोगी?"

"रूखा-सूखा जो भी मिलेगा। लेकिन पहले रब्बू को दूँगी और फिर ख़ुद खाऊँगी।"

"पहनने को क्या दोगी?"

"मैं तो मोटा और खुरदरा खद्दर पहनती हूँ, लेकिन रब्बू के लिए मैं कुछ अच्छा बुनने की कोशिश करूँगी।"

सभी पक्षी एक पल के लिए चुप हो गये और फिर उन्होंने दो टूक बात कह दी :

"रब्बू वहीं रुकना, जो सबसे अच्छा।
रब्बू वहीं रुकना, जो सबसे मीठा।"

बुढ़िया अम्मा सोचने लगी।

"जो सबसे अच्छा!"

"हाँ।"

"जो सबसे मीठा!"

"हाँ।"

बुढ़िया अम्मा के चेहरे पर चमक आ गयी।

वह बोली : "सबसे अच्छी होती माँ। ठण्डी-ठण्डी उसकी छाँव।"

"माँ! ... माँ!" रब्बू ने मन-ही-मन दोहराया। फिर बुढ़िया अम्मा के पैरों के पास बैठता हुआ बोला—"अम्मा, मैंने माँ को अभी तक कभी नहीं देखा। माँ मुझे कहाँ मिलेगी? मैं तो अपनी बन्दरिया-माँ के पास ही जाता हूँ।"

सभी पक्षी एक साथ चहचहा उठे—"नहीं रब्बू, यही तेरी माँ है।"

बुढ़िया अम्मा ने ममताभरी नज़रों से रब्बू को देखा और उसके बालों में हाथ फेरती हुई मुस्करायी। "मैं ... मैं तेरी माँ हूँ।"

एकाएक पक्षियों की चोंच से संगीत फूट पड़ा।

रब्बू को जहाँ रुकना चाहिए था, वह वहीं पहुँच गया था। यह बात पक्षी जान चुके थे। अब वे बेफ़िक्र होकर लौट सकते थे।

उन्होंने पंख फैलाये और जंगल टापू की तरफ़ उड़ चले।

रब्बू तब तक उनको देखता रहा, जब तक वे बादलों में छिप न गये। वह मुड़ा तो बुढ़िया अम्मा पानी का घड़ा भरकर खड़ी मिली। रब्बू ने आगे बढ़कर उसके हाथ से घड़ा थाम लिया। दोनों धीरे-धीरे रंग-बिरंगे फूलों से घिरी झोंपड़ी की तरफ़ चल पड़े।

जंगल टापू का संगीत

बूढ़ा ख़रगोश अब बहुत बूढ़ा हो गया। अब वह सारा दिन, आँखें बन्दकर, ध्यान में डूबा रहता था। अब वह कहीं नहीं जाता था। कभी-कभी ऐसा लगता, जैसे वह कुछ सुनने और समझने की कोशिश कर रहा हो। कई बार वह घबराकर आँखें खोलता और चारों तरफ़ देखने लग जाता। लगता था, कुछ समीप ही है जिसे वह देखना चाहता है, लेकिन आँखें खोलते ही जो भी कुछ होता, वह ग़ायब हो जाता।

जंगल टापू के ख़रगोश, सुबह से शाम तक, भोजन की तलाश में व्यस्त रहते थे। बूढ़े ख़रगोश को अब इस तरह व्यस्त रहने की ज़रूरत नहीं थी। अब उसे खाने के लिए तरह-तरह की चीज़ें नहीं चाहिए थीं। पेट भरने के लिए जितनी घास की उसे ज़रूरत थी, उतनी तो उसे अपनी खोह के पास ही मिल जाती थी।

आज फिर वह अपने ध्यान में मद्धिम संगीत सुन रहा था। वह कई दिनों से यह संगीत सुन रहा था। कभी उसे लगता, यह तो उसका वहम है। संगीत कहीं नहीं था, लेकिन उसका सोचना अगले ही पल ग़लत हो जाता। संगीत की धुन उसके कानों में मिठास घोलने लग जाती।

उसे याद आया, संगीत की झंकार उसने बचपन में भी सुनी थी। तब वह जंगल टापू के पहाड़ी झरने के पास एकान्त में खड़ा था, लेकिन उसने संगीत की ओर ध्यान नहीं दिया था। बस सिर झटककर अपने हमउम्र ख़रगोशों की ओर भाग गया था। बचपन के बाद तो वह बस शोर-शराबे में ही घिरा रहा था। उसे कभी इतना समय ही नहीं मिला कि वह संगीत के बारे में सोच सके।

अब संगीत उस तक पहुँच गया था।

वह सच की खोज करने के लिए अधीर हो उठा।

बूढ़े ख़रगोश की खोह के पास ही जंगली फूल थे। संगीत शायद फूलों में से आ रहा था।

उसने फूलों की तरफ़ कान किया, ''यह संगीत तुम्हारे अन्दर से आ रहा है क्या ?''

''नहीं।''

''लेकिन तुम इस संगीत को सुन तो रहे हो न !''

''हाँ, हाँ, सुन क्यों नहीं रहे! इसी संगीत से तो हमारे अन्दर ख़ुशबू फैल जाती है।''

''शायद तितली को कुछ पता हो ?''

''शायद।''

''मुझे नहीं पता कि संगीत किसमें है।'' तितली ने कहा, ''मुझे बस इतना पता है कि इसी

संगीत से मुझे रंग मिलते हैं।''

यह संगीत शायद पेड़ में से आ रहा था।

बूढ़े ख़रगोश ने पेड़ के तने को कान लगाया, लेकिन तने में कोई आवाज़ नहीं थी। पेड़ पर लगे पत्ते खड़-खड़कर ताल दे रहे थे।

''यह संगीत की आवाज़ कहाँ से आ रही है?'' बूढ़े ख़रगोश ने पेड़ से पूछा।

''मुझे नहीं मालूम। मैं तो बस संगीत के साथ पत्तों की ताल दे रहा हूँ।'' पेड़ ने कहा, ''लेकिन मुझे इतना मालूम है कि इसी संगीत से मेरी कोंपलें फूटती हैं। इसी संगीत से मुझमें फूल आते हैं, फल लगते हैं।''

बूढ़ा ख़रगोश आगे चल पड़ा। रास्ते मे उसे मधुमक्खियाँ मिलीं।

''तुम क्या कर रही हो ?''

''हम शहद इकट्ठा कर रही हैं।''

''लेकिन यह आवाज़ ... ।''

''यह हमारी आवाज़ है।'' मधुमक्खियों ने कहा।

''क्या तुम संगीत नहीं सुन रही ?''

''हम हर वक़्त संगीत गुनगुनाती रहती हैं। इस संगीत से हमारे शहद की मिठास दुगुनी हो जाती है।''

बूढ़ा ख़रगोश वहाँ से आगे चल पड़ा।

संगीत की आवाज़ उसे अभी भी सुनायी दे रही थी। संगीत शायद पत्थरों से निकल रहा था। वह सरपट जंगल टापू के पथरीले इलाक़े की ओर दौड़ पड़ा। उसने बड़े-बड़े पत्थरों के साथ कान लगाकर सुना। वह कभी एक पत्थर के पास जाता तो कभी दूसरे के पास। उसे हर बार लगता—संगीत अगले पत्थर में से फूट रहा है। फिर उसे लगा, संगीत पत्थरों में नहीं था। संगीत तो नदी के बहते पानी में था। पत्थरों के ऊपर से छलाँगें लगाता वह नदी के तट पर पहुँच गया।

पानी की चौड़ी छाती दूर तक शांत दिखायी दे रही थी। हवा से लहरें किनारे की तरफ़ आती थीं और पत्थरों से टकराकर घलप-घलप का ताल पैदा कर रहीं थीं। पानी संगीत के सँग-सँग थाप दे रहा था, लेकिन संगीत नदी में भी नहीं था।

बूढ़ा ख़रगोश कभी एक ओर भाग रहा था तो कभी दूसरी ओर। उसे चारों तरफ़ से संगीत सुनायी दे रहा था।

वह हाँफता बैठ गया। तेज़ साँसें थमीं तो उसने फिर संगीत की धुन की तरफ़ ध्यान दिया। अब संगीत पहले से ज़्यादा साफ़ था।

ख़रगोशों में घबराहट फैली हुई थी। एक दिन, दो दिन और फिर कई दिन बीत गये। ख़रगोश उसे ढूँढ़ने निकल पड़े।

उन्होंने बन्दरों, गिलहरियों, तोतों और दूसरे जानवरों से भी पूछा, लेकिन बूढ़े ख़रगोश के बारे में किसी को भी कुछ मालूम नहीं था।

वे चलते गये।

रास्ते में उन्हें कौआ मिला।

''तुमने बाबा को कहीं देखा है क्या ?'' ख़रगोशों ने पूछा।

''हाँ।''

''कहाँ ?''

''जो जंगल टापू की सबसे सुन्दर जगह है, बाबा वहीं है और केवल वहीं है।''

यह तो कोई जवाब नहीं। जंगल टापू तो यहाँ से वहाँ तक ख़ूबसूरत था। ख़रगोशों के पीछे-पीछे जंगल के दूसरे जीव भी बूढ़े ख़रगोश को ढूँढ़नें चल पड़े थे। कौआ कुछ देर तक सबको देखता रहा और फिर उड़ान भरकर साथ जा मिला, ''चलो, मैं भी तुम्हारे साथ मिलकर बाबा को ढूँढ़ता हूँ।''

उन्होंने जंगल टापू का चप्पा-चप्पा छान मारा और आख़िरकार बूढ़े ख़रगोश को ढूँढ निकाला।

वह नदी के किनारे चुपचाप आँखें बन्द किये पड़ा था। उसका चेहरा शांत था। चेहरे पर ख़ास तरह की चमक थी, संतोष की।

''बाबा ! ... बाबा !'' उन्होंने धीरे-से पुकारा।

बूढ़े ख़रगोश को किसी के आने का कुछ पता नहीं चला। लगता था, वह वहाँ था ही नहीं।

''बाबा ! ... बाबा !'' ख़रगोशों की पुकार के साथ कुछ दूसरे जानवरों की आवाज़ें भी मिल गयी थीं।

बूढ़े ख़रगोश ने धीरे-से आँखें खोलीं और इशारे से उन्हें चुप रहने के लिए कहा।

सब चुप हो गये।

''तुम सब संगीत सुन रहे हो न !''

''कौन-सा संगीत ?'' उन्हें तो कोई संगीत सुनायी नहीं पड़ रहा था। उन्होंने तो संगीत की तरफ़ ध्यान ही नहीं दिया था। एक बार फिर चुप्पी छा गयी, गहरी चुप्पी।

काफ़ी देर बाद उस चुप्पी को बूढ़े ख़रगोश ने तोड़ा, ''हम सभी शोर मचाते हैं न। यह शोर संगीत को नष्ट कर देता है। इसी वजह से हमें कभी संगीत सुनायी नहीं देता। यह संगीत तुम्हें बाहर से अलग होकर सुनना पड़ेगा।''

इस बार सबके चेहरे पर हैरानी नहीं, ख़ुशी फैली थी। उस लम्बी चुप्पी में से कितनी आवाज़ें उभर आयी थीं।

''हमने संगीत सुना है बाबा ! साफ़-साफ़ सुना है।''

''कहाँ है भला ?'' बूढ़ा ख़रगोश मुस्कराया।

"संगीत पेड़ों में से निकल रहा है न !"

"हाँ।"

"संगीत पानी में से फूट रहा है न !"

"हाँ !"

"संगीत तो फूलों में है।"

"नहीं, संगीत तो पत्थरों में से निकल रहा है।"

"हाँ।"

"बाबा, यह क्या बात हुई ? हम संगीत सुन रहे हैं, लेकिन कहाँ है वह संगीत ?"

"तुम सब ही ठीक हो। संगीत पत्थरों में भी है, पानी में भी, फूलों में भी, चिड़ियों में भी और जानवरों में भी।"

"क्या मतलब ?"

"संगीत तो हर चीज़ में है। तितलियों के रंग में, फूलों की ख़ुशबू में , जंगल टापू की ख़ूबसूरती में, जो कुछ भी सुन्दर है, अच्छा है, संगीत के चलते है। संगीत के बिना हम तो ठूँठ बन जायेंगे। अब तुम जाओ, लेकिन संगीत को अपने से दूर मत होने देना।"

"बाबा। हम तो आपको लेने आये हैं।"

"मुझे यहीं रहने दो। यह संगीत मुझे बड़ी मुश्किल से मिला है। मेरी थोड़ी-सी साँसें ही बची हैं। ये साँसें मुझे संगीत में ही ले लेने दो।"

वे सब चल पड़े, लेकिन कुछ क़दम चलकर रुक गए। बूढ़ा ख़रगोश आँखें बन्दकर वहीं पड़ा रहा। तेज़ हवा के वेग से लहरें उस तक पहुँचने लगी थीं।

रंग-बिरंगी तितलियाँ उसके आसपास ही घूम रही थीं। फूल खिलकर अपनी महक बिखेर रहे थे। बूढ़े ख़रगोश ने जल्दी-जल्दी साँस ली मानो संगीत को पी रहा हो। इस समय तो उसकी साँसें संगीतमय हो रही थीं।

बूढ़े ख़रगोश ने अन्तिम बार गहरे नीले रंग के आसमान की तरफ़ देखा और आँखें बन्द कर लीं। जंगल टापू का संगीत झरना बनकर फूट रहा था।

ISBN 81-7201-482-1

जंगल टापू है जीव-जंतुओं की एक अलग और अनोखी दुनिया।
पेड़-पौधे, बन्दर, ख़रगोश, कछुए, कौए, चील-गिद्ध, शेर, भालू,
चूहे और चींटियों की दुनिया। फूलों और तितलियों की दुनिया !
तभी संयोग से वहाँ आ टपका एक बच्चा। आदमी का बच्चा !
जंगल टापू में हर तरफ़ फैल गयी सनसनी !
बच्चा पलने-बढ़ने लगा पशुओं और पंछियों के साथ।
जंगल टापू में नित नये हंगामे, खेल-तमाशे और कारनामे होने लगे।
लेकिन एक दिन उस आदमी के बच्चे को जंगल टापू छोड़ना पड़ा। क्यों ?
इसका जवाब देंगी *जंगल टापू* की कहानियाँ !